RNI No. GUJHIN/2011/39228
GARVI GUJARAT
गरवी गुजरात
गरवी गुजरात
अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 311
दि. 15.03.2026,
रविवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

ड्रोन, होर्मुज और जिद की जंग: ईरान के सामने उलझती जा रही ट्रंप की रणनीति

जीएनएस)। तेहरान/वाशिंगटन। पश्चिम एशिया में शुरू हुआ अमेरिका-ईरान टकराव अब तेजी से ऐसे युद्ध में बदलता दिखाई दे रहा है जिसकी अवधि और परिणाम दोनों ही अनिश्चित होते जा रहे हैं। अमेरिका के राष्ट्रपति Donald Trump ने अपने दूसरे कार्यकाल की शुरुआत से ही आक्रामक विदेश नीति के संकेत दे दिए थे। वेनेजुएला में राष्ट्रपति को हटाने के अभियान के बाद ट्रंप प्रशासन ने ईरान में भी नेतृत्व को समाप्त कर सत्ता परिवर्तन की रणनीति अपनाने का प्रयास किया। फरवरी के अंत में तेहरान पर किए गए हमले में ईरान के सर्वोच्च नेता Ali Khamenei की मौत के बाद वाशिंगटन को उम्मीद थी कि ईरान की सत्ता तेजी से कमजोर हो जाएगी और कुछ ही हफ्तों में युद्ध का परिणाम उसके पक्ष में दिखाई देने लगेगा। लेकिन घटनाक्रम उल्टा होता नजर आ रहा है। जिस संघर्ष को ट्रंप कुछ ही दिनों में खत्म होने वाला युद्ध बता रहे थे, वह अब धीरे-धीरे लंबा और जटिल होता जा रहा है।

अमेरिकी रणनीति का सबसे बड़ा आधार यह था कि नेतृत्व खत्म होते ही ईरान की राजनीतिक व्यवस्था बिखर जाएगी और जनता सड़कों पर उतरकर सत्ता परिवर्तन का रास्ता बना देगी। लेकिन तेहरान में ऐसा नहीं हुआ। खामेनेई की मौत के बाद सत्ता तेजी से उनके बेटे Mojtaba Khamenei के हाथों में चली गई और ईरानी व्यवस्था पहले से अधिक सख्त होकर सामने आई। यह स्थिति वाशिंगटन के लिए अप्रत्याशित थी, क्योंकि उसकी उम्मीद थी कि नेतृत्व खत्म होने के बाद सत्ता संघर्ष शुरू होगा और देश भीतर से कमजोर पड़ जाएगा। इसके उलट ईरान की सत्ता संरचना ने खुद को संगठित करते हुए युद्ध की तैयारी और तेज कर दी।

युद्ध का सबसे बड़ा प्रभाव दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण समुद्री मार्गों में से एक Strait of Hormuz पर दिखाई दिया है। फारस की खाड़ी से गुजरने वाला यह समुद्री रास्ता वैश्विक तेल आपूर्ति की धुरी माना जाता है। ईरान ने इस मार्ग पर नियंत्रण मजबूत करते हुए जहाजों के लिए परमिट प्रणाली लागू कर दी और कई क्षेत्रों में नौवहन को सीमित कर दिया। इसका सीधा असर अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा बाजार पर पड़ा है। अमेरिका और उसके सहयोगियों के लिए यह स्थिति बड़ी चुनौती बन गई है, क्योंकि इस मार्ग को पूरी तरह सुरक्षित रखना अत्यंत महंगा और जोखिम भरा साबित हो सकता है। ईरान के सस्ते लेकिन प्रभावी ड्रोन और मिसाइलें अमेरिकी नौसेना के लिए लगातार खतरा बनी हुई हैं।

ईरान की ड्रोन शक्ति इस युद्ध का सबसे निर्णायक तत्व बनकर उभरी है। पिछले एक दशक में तेहरान ने कम लागत वाले ड्रोन और मिसाइलों के बड़े नेटवर्क को विकसित किया है। शाहेद श्रृंखला के ड्रोन हजारों की संख्या में तैयार किए गए हैं, जिन्हें भूमिगत ठिकानों से संचालित किया जा सकता है। इन ड्रोन की मारक क्षमता भले ही अत्यधिक आधुनिक हथियारों जितनी न हो, लेकिन उनकी संख्या और कम लागत उन्हें अत्यंत प्रभावी बना देती है। अमेरिकी सैन्य विश्लेषकों का मानना है कि यही कारण है कि अमेरिका की अत्याधुनिक वायु शक्ति के बावजूद युद्ध जल्दी समाप्त नहीं हो पा रहा।

इस संघर्ष की पृष्ठभूमि समझने के लिए 1979 की Iranian Revolution को याद करना आवश्यक है। इसी क्रांति के बाद ईरान में इस्लामिक गणराज्य की स्थापना हुई और अमेरिका के साथ उसके संबंध लगातार तनावपूर्ण बने रहे। पिछले चार दशकों में ईरान ने अपने सैन्य ढांचे को धीरे-धीरे मजबूत किया और साथ ही पश्चिम एशिया में कई प्रॉक्सी समूहों के साथ नेटवर्क भी बनाया। समय के साथ-साथ तकनीक के विकास ने ईरान को नई सैन्य क्षमताएं प्रदान कीं। अमेरिका और इजरायल ने कई बार ईरानी वैज्ञानिकों और सैन्य अधिकारियों को निशाना बनाकर उसके कार्यक्रमों को रोकने की कोशिश की, लेकिन तेहरान ने हर बार नई रणनीति के साथ वापसी की।

इस युद्ध में इजरायल की भूमिका भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। इजरायल के प्रधानमंत्री Benjamin Netanyahu लंबे समय से ईरान को अपने देश के लिए सबसे बड़ा खतरा बताते रहे हैं। इजरायल की रणनीति अक्सर विरोधी संगठनों या नेताओं को सीधे निशाना बनाने की रही है। हमास और हिज्बुल्लाह जैसे संगठनों के कई शीर्ष नेताओं को खत्म करने की नीति इसी रणनीति का हिस्सा रही है। लेकिन ईरान कोई संगठन नहीं बल्कि एक संप्रभु राष्ट्र है, इसलिए वहां नेतृत्व खत्म करने की नीति उतनी प्रभावी नहीं रही जितनी अपेक्षा की गई थी।

खामेनेई की मौत के बाद वैश्विक शिया समुदाय में भी तीखी प्रतिक्रिया देखी गई। ईरान का सर्वोच्च नेता केवल देश का राजनीतिक प्रमुख ही नहीं बल्कि दुनिया भर के शिया मुसलमानों के लिए धार्मिक नेतृत्व का प्रतीक भी माना जाता है। ऐसे में इस हमले को केवल एक राजनीतिक घटना नहीं बल्कि धार्मिक और भावनात्मक चुनौती के रूप में भी देखा गया। इससे ईरान के भीतर बदले और प्रतिरोध की भावना और मजबूत हुई है।

अमेरिका के सामने सबसे बड़ी रणनीतिक समस्या यह है कि इस युद्ध का स्पष्ट लक्ष्य अब तक तय नहीं हो पाया है। शुरुआत में ट्रंप प्रशासन ने कहा था कि इस संघर्ष का उद्देश्य ईरान में सत्ता परिवर्तन और उसके परमाणु कार्यक्रम को रोकना है। लेकिन अब अमेरिकी अधिकारियों के बयान इस मुद्दे पर अलग-अलग नजर आते हैं। सत्ता परिवर्तन की बात धीरे-धीरे पीछे चली गई है और चर्चा केवल परमाणु कार्यक्रम तक सीमित रह गई है। फिर भी यह स्पष्ट नहीं है कि अमेरिका इसे किस प्रकार रोकना चाहता है।

अंतरराष्ट्रीय परमाणु निगरानी संस्था International Atomic Energy Agency के अनुसार ईरान के पास अभी भी बड़ी मात्रा में अत्यधिक समृद्ध यूरेनियम मौजूद है। यह भंडार अत्यंत गहराई में सुरक्षित ठिकानों में रखा गया है, जिन्हें नष्ट करना आसान नहीं है। अमेरिकी बमवर्षक विमानों द्वारा किए गए हमलों के बावजूद इन ठिकानों को पूरी तरह खत्म नहीं किया जा सका है। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि इन्हें पूरी तरह नष्ट करना है तो जमीन पर सैन्य कार्रवाई करनी पड़ेगी, जिसमें सैनिकों की तैनाती आवश्यक होगी। लेकिन ट्रंप लंबे समय से विदेशी युद्धों में अमेरिकी सैनिक भेजने के विरोधी रहे हैं, इसलिए यह निर्णय उनके लिए राजनीतिक रूप से भी कठिन होगा।

युद्ध का एक और पहलू अमेरिकी घरेलू राजनीति से जुड़ा है। राष्ट्रपति चुनाव के दौरान ट्रंप ने बार-बार कहा था कि वे अमेरिका को दूसरे देशों के युद्धों में नहीं उलझने देंगे। लेकिन अब वही अमेरिका एक बड़े सैन्य अभियान में फंसता दिखाई दे रहा है। यदि यह युद्ध लंबा खिंचता है और इसमें अमेरिकी सैनिकों की मौत बढ़ती है या तेल की कीमतों में तेज उछाल आता है, तो इसका असर अमेरिकी मतदाताओं पर भी पड़ सकता है।

युद्ध की शुरुआत में ट्रंप और नेतन्याहू को उम्मीद थी कि ईरान की जनता सरकार के खिलाफ खड़ी हो जाएगी। उस समय देश में खामेनेई के खिलाफ प्रदर्शन भी हो रहे थे। लेकिन बाहरी हमले के बाद स्थिति बदल गई और ईरानी समाज में राष्ट्रीय एकता की भावना मजबूत हो गई। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि बाहरी खतरे की स्थिति में अक्सर ऐसा ही होता है, जब जनता अपने मतभेदों को कुछ समय के लिए किनारे रख देती है।

अब यह युद्ध केवल सैन्य शक्ति का संघर्ष नहीं बल्कि रणनीति, धैर्य और आर्थिक क्षमता की परीक्षा बन गया है। ईरान लंबे समय तक संघर्ष झेलने की क्षमता रखता है और उसने अपनी सैन्य संरचना भी उसी आधार पर विकसित की है। दूसरी ओर अमेरिका को अपने वैश्विक हितों, सहयोगियों और घरेलू राजनीति के बीच संतुलन बनाकर चलना पड़ रहा है।

यही कारण है कि जिस युद्ध को कुछ ही दिनों में समाप्त करने का दावा किया गया था, वह अब अनिश्चितता और जटिलताओं से घिर गया है। ड्रोन, समुद्री मार्गों की नाकेबंदी और राजनीतिक रणनीतियों के इस संघर्ष में फिलहाल किसी भी पक्ष के लिए स्पष्ट जीत दिखाई नहीं दे रही। पश्चिम एशिया का यह टकराव अब केवल दो देशों के बीच का युद्ध नहीं रहा, बल्कि वैश्विक राजनीति और ऊर्जा सुरक्षा से जुड़ा ऐसा संकट बन गया है जिसका प्रभाव आने वाले समय में पूरी दुनिया पर पड़ सकता है।

कर्नाटक में उपचुनाव की आहट तेज, कांग्रेस ने बागलकोट और दावणगेरे दक्षिण सीटों के लिए शुरू की व्यापक तैयारी

जीएनएस)। बेंगलुरु। कर्नाटक की राजनीति में एक बार फिर चुनावी हलचल तेज होती दिखाई दे रही है। राज्य की दो विधानसभा सीटों पर होने वाले उपचुनाव को लेकर राजनीतिक दलों ने अपनी रणनीतियां बनानी शुरू कर दी हैं। इस बीच राज्य के मुख्यमंत्री Siddaramaiah ने स्पष्ट संकेत दिया है कि इन उपचुनावों के लिए Indian National Congress पूरी तरह तैयार है और पार्टी ने चुनावी मोर्चे पर अपनी तैयारियों को लगभग अंतिम रूप दे दिया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि बागलकोट और दावणगेरे दक्षिण विधानसभा सीटों पर होने वाले उपचुनाव को लेकर पार्टी संगठन पूरी तरह सक्रिय है और चुनाव जीतने के लिए रणनीति तैयार कर ली गई है।

दरअसल इन दोनों सीटों पर उपचुनाव की नौबत इसलिए आई है क्योंकि यहां के दो वरिष्ठ विधायकों के निधन के बाद ये सीटें रिक्त हो गई थीं। बागलकोट सीट का प्रतिनिधित्व कर रहे पूर्व विधायक H. Y. Meti के निधन से यह सीट खाली हुई, जबकि दावणगेरे दक्षिण सीट के विधायक Shamanur Shivashankarappa के निधन के बाद वहां भी उपचुनाव की स्थिति बन गई। इन दोनों नेताओं का अपने-अपने क्षेत्रों में काफी प्रभाव था और उनके निधन से स्थानीय राजनीति में एक बड़ा खालीपन पैदा हो गया है। अब इन सीटों पर नए प्रतिनिधि के चयन के लिए चुनाव प्रक्रिया शुरू होने जा रही है।

मुख्यमंत्री सिद्धरमैया ने कहा कि कांग्रेस पार्टी इन दोनों सीटों को जीतने के लिए पूरी गंभीरता के साथ तैयारी कर रही है। उन्होंने बताया कि पार्टी के प्रदेश स्तर के नेता लगातार बैठकें कर रहे हैं और स्थानीय संगठन से फीडबैक लेकर चुनावी रणनीति तय की जा रही है। उनके अनुसार इन सीटों पर कांग्रेस का मजबूत आधार रहा है और पार्टी को विश्वास है कि जनता का समर्थन इस बार भी कांग्रेस को मिलेगा। उन्होंने कहा कि उपचुनाव केवल एक औपचारिक प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह जनता के विश्वास और पार्टी की नीतियों की परीक्षा भी होता है।

उम्मीदवार चयन के मुद्दे पर मुख्यमंत्री ने कहा कि दोनों सीटों के लिए संभावित नामों पर चर्चा चल रही है। राज्य स्तर के वरिष्ठ नेता संभावित उम्मीदवारों के नामों को अंतिम रूप देकर पार्टी के केंद्रीय नेतृत्व को भेजेंगे। इसके बाद अंतिम निर्णय पार्टी हाईकमान द्वारा लिया जाएगा। सिद्धरमैया ने यह भी स्पष्ट किया कि उम्मीदवार का चयन करते समय स्थानीय लोकप्रियता, संगठन के प्रति समर्पण और जीतने की क्षमता जैसे सभी पहलुओं पर गंभीरता से विचार किया जाएगा। बागलकोट सीट को लेकर खास तौर पर दिलचस्प स्थिति बनी हुई है। मुख्यमंत्री ने संकेत दिया कि दिवंगत विधायक एच. वाई. मेटी के परिवार के सदस्य भी इस सीट से चुनाव लड़ने के इच्छुक हैं और उन्हें संभावित दावेदारों में माना जा रहा है। सिद्धरमैया ने कहा कि किसी भी व्यक्ति का चुनाव लड़ने की इच्छा रखना लोकतांत्रिक प्रक्रिया का हिस्सा है और इसमें कुछ भी गलत नहीं है। उन्होंने कहा कि पार्टी सभी दावेदारों के बारे में विचार करेगी और फिर ऐसा निर्णय लिया जाएगा जिससे पार्टी को अधिकतम लाभ मिल सके। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि उपचुनाव अक्सर किसी भी सरकार और सत्तारूढ़ दल के लिए जनमत की एक महत्वपूर्ण परीक्षा होते हैं। हालांकि यह चुनाव केवल दो सीटों के लिए होगा, लेकिन इसके राजनीतिक संकेत काफी दूर तक जा सकते हैं। यदि कांग्रेस इन सीटों पर जीत दर्ज करती है तो इससे राज्य में उसकी स्थिति और मजबूत होने का संदेश जाएगा। वहीं विपक्षी दल भी इन सीटों पर अपनी ताकत आजमाने की कोशिश करेंगे। मुख्यमंत्री सिद्धरमैया ने यह भी बताया कि चुनाव आयोग जल्द ही इन उपचुनावों की तारीखों की घोषणा कर सकता है।

तमिलनाडु में चुनावी सरगर्मी तेज: नई पार्टियों की एंट्री से सियासी मुकाबला रोचक

जीएनएस)। चेन्नई। तमिलनाडु में आगामी विधानसभा चुनाव को लेकर राजनीतिक गतिविधियां तेज हो गई हैं और राज्य की राजनीति एक नए दौर में प्रवेश करती दिखाई दे रही है। राज्य विधानसभा का कार्यकाल 10 मई 2026 को समाप्त होने वाला है और परंपरा के अनुसार चुनाव आयोग आमतौर पर कार्यकाल खत्म होने से चार से छह सप्ताह पहले मतदान कराता है। इसी वजह से माना जा रहा है कि राज्य में मतदान अप्रैल के दूसरे सप्ताह में आयोजित किया जा सकता है। चुनावी माहौल बनते ही सभी प्रमुख दलों ने अपनी रणनीतियों को अंतिम रूप देना शुरू कर दिया है, वहीं दो नई राजनीतिक पार्टियों की एंट्री ने इस बार के चुनाव को और अधिक दिलचस्प बना दिया है।

तमिलनाडु की राजनीति में सबसे ज्यादा चर्चा फिल्म अभिनेता Vijay की नई पार्टी Tamizhaga Vetri Kazhagam को लेकर हो रही है। अभिनेता विजय, जिन्हें उनके प्रशंसक 'थलापति' के नाम से जानते हैं, ने अपनी राजनीतिक पार्टी के माध्यम से पहली बार विधानसभा चुनाव में उतरने का फैसला किया है। उनकी पार्टी ने पहले ही स्पष्ट कर दिया है कि वह राज्य की सभी 234 विधानसभा सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारेगी। इस घोषणा के साथ ही यह साफ हो गया है कि टीवीके तमिलनाडु की राजनीति में किसी भी बड़े गठबंधन का हिस्सा बनने के बजाय स्वतंत्र रूप से अपनी ताकत आजमाना चाहती है। विजय की पार्टी ने एक और महत्वपूर्ण राजनीतिक संदेश देते हुए यह भी साफ कर दिया है कि वह भाजपा के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के साथ किसी भी प्रकार का चुनावी गठबंधन नहीं करेगी। पार्टी के संयुक्त महासचिव Nirmal Kumar ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि भाजपा उनकी पार्टी की वैचारिक विरोधी है और इस वजह से दोनों दलों के बीच किसी प्रकार के चुनावी समझौते की संभावना नहीं है। उन्होंने यह भी कहा कि मीडिया में जो खबरें गठबंधन की संभावना को लेकर चल रही हैं, वे केवल अटकलें हैं और उनका वास्तविकता से कोई संबंध नहीं है।

इस चुनाव में दूसरी नई पार्टी के रूप में पूर्व मुख्यमंत्री J Jayalalithaa की करीबी सहयोगी और All India Anna Dravida Munnetra Kazhagam से निष्कासित नेता V K Sasikala ने भी अपने राजनीतिक सफर की नई शुरुआत की है। शशिकला ने 13 मार्च को अपनी नई पार्टी All India Puratchi Thalaivar Makkal Munnetra Kazhagam के गठन की घोषणा की। उन्होंने बताया कि उनकी पार्टी आगामी विधानसभा चुनाव में लगभग 40 सीटों पर उम्मीदवार उतारेगी। शशिकला ने अपनी पार्टी के चुनाव चिन्ह और झंडे को भी सार्वजनिक किया है। पार्टी का चुनाव चिन्ह नारियल के पेड़ों वाला खेत है, जबकि पार्टी के झंडे पर तमिल राजनीति के तीन प्रमुख नेताओं की तस्वीरें शामिल की गई हैं। इनमें C N Annadurai, M G Ramachandran और जयललिता की तस्वीरें हैं। इन तीनों नेताओं को तमिलनाडु की राजनीति में द्रविड़ आंदोलन और क्षेत्रीय राजनीतिक परंपरा के महत्वपूर्ण प्रतीक के रूप में देखा जाता है। शशिकला ने यह भी संकेत दिया है कि उनकी पार्टी चुनाव अकेले नहीं लड़ेगी, बल्कि समान विचारधारा वाले दलों के साथ गठबंधन करने की कोशिश करेगी।

राज्य की मुख्यधारा की राजनीति में भी चुनावी तैयारियां तेज हो चुकी हैं। Indian National Congress ने तमिलनाडु विधानसभा चुनाव को देखते हुए कई महत्वपूर्ण समितियों का गठन किया है। पार्टी के अध्यक्ष Mallikarjun Kharge ने राज्य में चुनावी तैयारियों को व्यवस्थित करने के लिए प्रदेश स्तर की कई समितियों को मंजूरी दी है। इनमें के. सेल्वपेरुंथगई की अध्यक्षता में प्रदेश चुनाव समिति का गठन भी शामिल है। कांग्रेस ने इसके अलावा चुनाव प्रचार समिति, चुनाव घोषणापत्र समिति, चुनाव प्रबंधन समिति और समन्वय समिति जैसी कई इकाइयों का भी गठन किया है, जिनका उद्देश्य चुनावी रणनीति को मजबूत बनाना और संगठनात्मक स्तर पर बेहतर तालमेल स्थापित करना है। कांग्रेस इस बार भी सत्तारूढ़ दल Dravida Munnetra Kazhagam के साथ गठबंधन में चुनाव लड़ रही है।

गठबंधन के तहत डीएमके ने अपने सहयोगी दलों को सीटों का बंटवारा भी कर दिया है। समझौते के अनुसार कांग्रेस को 28 सीटें दी गई हैं, जबकि Marumalarchi Dravida Munnetra Kazhagam को चार सीटें आवंटित की गई हैं। इसके अलावा Indian Union Muslim League और Manithaneya Makkal Katchi को दो-दो सीटें दी गई हैं। इस तरह डीएमके नेतृत्व वाला गठबंधन चुनाव में मजबूत तालमेल के साथ उतरने की तैयारी कर रहा है।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि इस बार का चुनाव कई मायनों में खास होगा। एक ओर राज्य की पारंपरिक राजनीति में डीएमके और एआईएडीएमके जैसे बड़े दलों का प्रभाव बना हुआ है, वहीं दूसरी ओर अभिनेता विजय और शशिकला जैसी नई राजनीतिक ताकतों की एंट्री ने चुनावी समीकरण को और जटिल बना दिया है।

ओडिशा राज्यसभा चुनाव से पहले सियासी घमासान विधायकों की खरीद-फरोख्त के आरोपों से गरमाई राजनीति

जीएनएस)। कटक। ओडिशा में राज्यसभा चुनाव से पहले राजनीतिक माहौल अचानक तेज हो गया है। बीजू जनता दल के अध्यक्ष Naveen Patnaik ने भारतीय जनता पार्टी पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा है कि आगामी राज्यसभा चुनाव में विधायकों की खरीद-फरोख्त की कोशिश की जा रही है। पटनायक ने इस तरह की गतिविधियों को लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए गंभीर खतरा बताते हुए कहा कि अगर चुनाव प्रक्रिया को प्रभावित करने के लिए धनबल का इस्तेमाल किया जाता है तो यह लोकतंत्र के मूल सिद्धांतों के खिलाफ अपराध के समान है। उनके इस आरोप के बाद राज्य की राजनीति में हलचल तेज हो गई है और सत्ता पक्ष तथा विपक्ष के बीच आरोप-प्रत्यारोप का दौर शुरू हो गया है।

दरअसल ओडिशा में राज्यसभा की चार सीटों के लिए चुनाव होने जा रहा है, लेकिन मैदान में पांच उम्मीदवार उतरने के कारण मुकाबला बेहद रोचक और अनिश्चित हो गया है। यही कारण है कि राजनीतिक दलों को क्रॉस-वोटिंग की आशंका भी सता रही है। राज्य की विधानसभा में किसी एक दल के पास चौथी सीट सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त संख्या नहीं है, जिससे चुनाव की स्थिति जटिल बन गई है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि इस बार का राज्यसभा चुनाव साधारण औपचारिकता नहीं बल्कि वास्तविक राजनीतिक परीक्षा बन गया है।

बीजद अध्यक्ष नवीन पटनायक ने विधानसभा परिसर में आयोजित मॉक-पोल सत्र के बाद पत्रकारों से बातचीत में यह आरोप लगाया कि भाजपा के कुछ नेता और उसके तीनों उम्मीदवार विधायकों से संपर्क कर उन्हें प्रभावित करने की कोशिश कर रहे हैं। पटनायक ने कहा कि लोकतांत्रिक चुनावों में जीत हासिल करने का सही तरीका जनता के समर्थन और विधायकों के विश्वास से होना चाहिए, न कि किसी प्रकार के प्रलोभन या दबाव के माध्यम से। उन्होंने कहा कि यदि विधायकों की खरीद-फरोख्त जैसी प्रवृत्तियां बढ़ती हैं तो यह लोकतंत्र की मूल भावना को कमजोर कर देगी।

पटनायक के इस बयान ने राज्य की राजनीति में नई बहस छेड़ दी है। उनके आरोपों पर प्रतिक्रिया देते हुए भाजपा के वरिष्ठ विधायक Jaya Narayan Mishra ने इन दावों को पूरी तरह निराधार बताया है। मिश्रा ने कहा कि भाजपा किसी भी प्रकार की खरीद-फरोख्त में शामिल नहीं है और पार्टी केवल लोकतांत्रिक प्रक्रिया के तहत चुनाव लड़ रही है। उन्होंने तंज कसते हुए कहा कि बीजद प्रमुख चुनाव से पहले ही हार की आशंका से घिर गए हैं, इसलिए इस तरह के आरोप लगा रहे हैं। मिश्रा ने यह भी कहा कि जिस व्यक्ति को पीलिया हो जाता है उसे हर चीज पीली दिखाई देती है, उसी तरह बीजद नेतृत्व को हर जगह साजिश ही दिखाई दे रही है।

भाजपा के आधिकारिक उम्मीदवारों में राज्य इकाई के अध्यक्ष Manmohan Samal और वर्तमान राज्यसभा सांसद Sujit Kumar शामिल हैं। इनके अलावा पूर्व केंद्रीय मंत्री Dilip Ray निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में मैदान में हैं और उन्हें भाजपा का समर्थन प्राप्त बताया जा रहा है। दूसरी ओर बीजू जनता दल की ओर से Santrupt Mishra और Dr Datteshwar Hota को उम्मीदवार बनाया गया है। इन दोनों उम्मीदवारों को कांग्रेस और वामपंथी दलों का समर्थन मिलने की बात कही जा रही है। इस तरह से पांच उम्मीदवारों के मैदान में होने के कारण चुनाव का गणित काफी जटिल हो गया है और हर वोट की अहमियत बढ़ गई है।

राजनीतिक पर्यवेक्षकों का कहना है कि चौथी सीट पर मुकाबला सबसे ज्यादा दिलचस्प है। यदि विधायकों के बीच किसी भी प्रकार की क्रॉस-वोटिंग होती है तो चुनाव का परिणाम अप्रत्याशित हो सकता है। इसी संभावना के कारण दोनों पक्ष एक-दूसरे पर आरोप लगा रहे हैं और अपने-अपने विधायकों को एकजुट रखने की कोशिश कर रहे हैं। राज्य की राजनीति में यह चुनाव इसलिए भी महत्वपूर्ण माना जा रहा है क्योंकि इससे आने वाले समय में दलों की राजनीतिक ताकत का भी संकेत मिल सकता है।

भाजपा की ओर से पलटवार करते हुए जय नारायण मिश्रा ने कहा कि कुछ विधायक बीजद से असंतुष्ट हैं और उन्हें भविष्य को लेकर चिंता है। उन्होंने दावा किया कि कई विधायक भाजपा की नीतियों और नेतृत्व से प्रभावित हैं और यही कारण है कि वे अंतरात्मा की आवाज पर मतदान करने का निर्णय ले सकते हैं। मिश्रा ने कहा कि यदि कोई विधायक अपनी इच्छा से मतदान करता है तो उसे खरीद-फरोख्त कहना उचित नहीं होगा। उनके अनुसार लोकतंत्र में हर जनप्रतिनिधि को अपने विवेक से निर्णय लेने का अधिकार है।

इस राजनीतिक विवाद के बीच बीजद के कुछ नेताओं ने भी भाजपा पर तीखा हमला बोला है। बीजद विधायक Byomkesh Ray ने आरोप लगाया कि राज्य के मुख्यमंत्री Mohan Charan Majhi विधायकों से संपर्क कर उन्हें प्रभावित करने की कोशिश कर रहे हैं। रे ने कहा कि यदि किसी मुख्यमंत्री द्वारा इस तरह की पहल की जाती है तो यह दुर्भाग्यपूर्ण है और इससे लोकतांत्रिक मूल्यों को नुकसान पहुंचता है। हालांकि भाजपा ने इन आरोपों को भी सिरे से खारिज कर दिया है और कहा है कि विपक्ष केवल राजनीतिक लाभ के लिए ऐसी बातें कर रहा है।

राज्यसभा चुनाव को लेकर यह विवाद ऐसे समय सामने आया है जब ओडिशा में लंबे समय बाद इस तरह का प्रतिस्पर्धी चुनाव देखने को मिल रहा है। राज्य में पिछले लगभग बारह वर्षों से राज्यसभा चुनाव बिना किसी बड़े मुकाबले के संपन्न होते रहे हैं, क्योंकि सीटों की संख्या और दलों की ताकत के आधार पर परिणाम पहले से तय हो जाते थे। लेकिन इस बार परिस्थितियां अलग हैं और चार सीटों के लिए पांच उम्मीदवार मैदान में होने से चुनावी माहौल बेहद रोचक बन गया है।

राज्यसभा की ये चार सीटें 2 अप्रैल को खाली हो रही हैं, इसलिए इनके लिए 16 मार्च को मतदान निर्धारित किया गया है। राजनीतिक दलों ने अपने-अपने विधायकों को एकजुट रखने के लिए लगातार बैठकें और रणनीतिक चर्चाएं शुरू कर दी हैं। कई दल अपने विधायकों को समूह में रखने की भी कोशिश कर रहे हैं ताकि किसी प्रकार की क्रॉस-वोटिंग की संभावना कम हो सके। ओडिशा की राजनीति में इस चुनाव को केवल राज्यसभा की सीटों तक सीमित नहीं देखा जा रहा है। इसे राज्य की बदलती राजनीतिक परिस्थितियों और दलों के प्रभाव के संकेत के रूप में भी देखा जा रहा है। यदि किसी भी पक्ष को अप्रत्याशित सफलता मिलती है तो इसका असर आने वाले चुनावों और गठबंधनों पर भी पड़ सकता है। फिलहाल आरोप-प्रत्यारोप के बीच राज्य की राजनीति में तनाव का माहौल बना हुआ है।

संपादकीय

अनिद्रा की महामारी

भारतीय जन-जीवन में तेजी से घर करती डिजिटल जीवन शैली ने युवाओं की नींद को बुरी तरह प्रभावित किया है। जिसके चलते उनमें आक्रामकता, अवसाद व आत्महत्या की प्रवृत्ति विकसित हो रही है। देश-दुनिया में समय-समय पर आने वाले विभिन्न सर्वेक्षण इस संकट की ओर इशारा कर रहे हैं। लेकिन देश में किशोरों का स्क्रीन टाइम घातक ढंग से बढ़ रहा है। आमतौर पर चिकित्सा विशेषज्ञ मानते हैं कि किशोरों की सेहत के लिये आठ घंटे की नींद जरूरी होती है। हालांकि, कुछ विशेषज्ञ आठ घंटे के बजाय सात-छह घंटे की नींद को भी पर्याप्त मानते हैं, बशर्ते उसमें बीच में किसी तरह का व्यवधान न हो। लेकिन बिना किसी जरूरी काम के कथित सोशल मीडिया पर सक्रिय रहना आज के दौर में फैशन सा बन गया है। अमेरिका समेत कई पश्चिमी देशों में हुए हालिया शोध बताते हैं कि रात में जल्दी सोने व सुबह जल्दी उठने से बेहतर स्वास्थ्य बनता है। यह भारतीय जीवन दर्शन की अपरिहार्य धारणा भी रही है। लेकिन देश में पहले टीवी और अब मोबाइल फोन के अनियंत्रित उपयोग ने युवाओं की रात की नींद उड़ा दी है। जिसके चलते युवा पूरे दिन उखड़े-उखड़े और अशांत रहते हैं। उनमें आक्रामकता बढ़ रही है। फिर वे अवसाद के शिकार हो जाते हैं। बाधित नींद की इस स्थिति में कालांतर मन में आत्महत्या जैसे नकारात्मक भाव उमड़ने लगते हैं। एक सर्वे बताता है कि देश में 73 फीसदी दसवीं के छात्र आठ घंटे से कम की नींद सोते हैं। कलकत्ता स्लीप सोसाइटी के विशेषज्ञ बताते हैं कि दुनिया में 60 से 70 फीसदी किशोर पर्याप्त नींद नहीं ले पा रहे हैं। दरअसल, आज छात्रों पर अभिभावकों व शिक्षकों का अनुशासन कम ही चलता है। मां-बाप के टोकने पर वे दलील देते हैं कि ऑन लाइन पढ़ाई चल रही है। कोरोना संकट ने देश-दुनिया में ऑनलाइन पढ़ाई का विकल्प तो दिया, लेकिन तमाम तरह की विसंगतियां व विकृतियां भी किशोरों के जीवन में भर दी हैं। एक चौंकाने वाला आंकड़ा बताता है कि देश में सत्तर करोड़ भारतीय छह घंटे की नींद नहीं ले पाते। वहीं 46 प्रतिशत भारतीय छह घंटे से कम की नींद ले पाते हैं। लेकिन सबसे बड़ा संकट युवाओं व किशोरों से जुड़ा है। वे देर रात तक ऑनलाइन गेमों से जुड़े रहते हैं। रात में जाने-अनजाने दोस्त उनके सहभागी बनते हैं। जो कालांतर एक नशे की लत का रूप ले लेता है। परिजनों की रोक-टोक उन्हें रास नहीं आती। कई घटनाओं में उनके आक्रामक व्यवहार के घातक परिणाम सामने आए हैं। यहां तक कि नजदीकी परिजनों की हत्या की घटनाएं भी हुई हैं। दरअसल, ऑनलाइन खेलों को इस तरह डिजाइन किया गया है कि वे किशोरों के लिये नशा बन जाते हैं। रात का एकांत उन्हें रास आता है। जिसके चलते वे नींद की परवाह नहीं करते। वहीं दूसरी ओर सोशल मीडिया व ओटीटी प्लेटफॉर्मों पर तमाम वर्जित व अश्लील सामग्री की रात्रि में भरमार रहती है। जिसकी चपेट में छोटे-बड़े लोग आ रहे हैं। युवा देर रात का एकांत तलाशते हैं ताकि परिजनों की अनुपस्थिति में वे मनमानी कर सकें। वे देर रात तक ऑनलाइन रहने में अपनी शान समझते हैं। यह भूल जाते हैं कि वास्तव में, वे अपनी सेहत से किस हद तक खिलवाड़ कर रहे हैं। चिकित्सा विशेषज्ञ चेतावनी देते रहे हैं अनिद्रा से उच्च रक्तचाप की समस्या पैदा हो रही है। जो कालांतर हाइपरटेंशन में बदल जाती है। दरअसल, शरीर की जैविक घड़ी के परिचालन में व्यवधान से शरीर नकारात्मक प्रतिक्रिया देता है। देर रात जागने और मोबाइल के नशे में किशोर असमय खाते-पीते हैं, जिससे उनमें मोटापे की समस्या भी घर कर रही है। यही वजह है कि अब किशोरों तक में डाइबिटीज की समस्या देखने में आ रही है। दरअसल, कुदरती सोने के समय का विकल्प देर रात या सुबह की नींद नहीं हो सकती है। यह संकट बड़ा है और अभिभावकों व शिक्षकों को किशोरों की देर रात जागने की प्रवृत्ति पर अंकुश लगाने के लिये गंभीर प्रयास करने होंगे। अन्यथा देश को कालांतर अस्वस्थ युवा पीढ़ी का संत्रास झेलने को बाध्य होना पड़ेगा।

पंजाब की 'कैंसर बेल्ट' के संकट की भ्रांति दूर करने का वक्त

> कोई व्यक्ति जब मालवा क्षेत्र की 'कैंसर बेल्ट' शब्द सुनता है, तो लगेगा कि विज्ञान प्रेरित लगने वाला यह निष्कर्ष लंबे शोध अध्ययनों पर आधारित होगा, जबकि असल में ऐसा बिल्कुल नहीं। पंजाब वास्तव में कई स्वास्थ्य और पर्यावरणीय संकटों का केंद्र है- लेकिन आंकड़े स्पष्ट रूप से दिखाते हैं कि कैंसर उनमें से एक नहीं है।

एक दशक से,पंजाब के जन-स्वास्थ्य से जुड़ी चर्चाओं में जो एकमात्र छवि सबसे ज्यादा उभरती है—वह है ट्रेन नंबर 14888, जिसे 'कैंसर एक्सप्रेस' भी कहा जाता है। आधी रात बठिंडा से बीकानेर जाने वाली इस रेलगाड़ी में सवार लोगों को देखने वाले और पश्चिमी देशों के डॉक्यूमेंट्री फ़िल्म निर्माताओं के लिए, यह एक 'विफल' भूमि का उदाहरण है-एक पुण्यभूमि जिसका नुकसान उसकी कथित कृषि-सफलता ने ही किया। हालांकि आलोचनात्मक नज़रिए से इस स्थिति की गहन जांच करने पर इस दलील की खामी ज़ाहिर हो जाती है।दुर्भाग्य से, कोई बाहरी व्यक्ति जब मालवा क्षेत्र की 'कैंसर बेल्ट' शब्द सुनता है तो लगेगा कि विज्ञान-प्रेरित लगने वाला यह निष्कर्ष लंबे शोध अध्ययनों पर आधारित होगा, जबकि असल में ऐसा बिल्कुल नहीं। मीडिया में इस शब्द का पहला लिखित उपयोग जून, 2005 में 'डाउन टू अर्थ' मैगज़ीन में हुआ था। यह नाम एक भाषाई बदलाव रणनीति का परिणाम है, मालवा इलाके के लिए दशकों से इस्तेमाल हो रहे 'कॉटन बेल्ट' में कॉटन की जगह कैंसर रखकर नया नाम गढ़ डाला। तब से, दुनिया के पर्यावरण पत्रकारों ने इस कहानी को अलग-अलग तरीकों से दिखाया।

एक सराहनीय सामाजिक सेवा के अलावा 'कैंसर ट्रेन' के वजूद की कोई और वजह नहीं। 1940 के दशक से, बीकानेर का आचार्य तुलसी रीजनल कैंसर हॉस्पिटल (बाद में देश का 13वां क्षेत्रीय कैंसर सेंटर बना) मुफ़्त कैंसर इलाज देता आया है, जिनमें मालवा इलाके के मरीज़ भी शामिल हैं। इसके अलावा, 1990 के दशक से ही, भारतीय रेलवे कैंसर मरीज़ों के लिए भाड़ा माफी और तीमारदार के लिए स्लीपर और एसी-तृतीय यान में किराया छूट दे रहा है। इसलिए, ट्रेन में 'भीड़' की वजह सस्ते इलाज के साथ मुफ़्त टिकटों की सुविधा भी है न कि सिर्फ स्थानीय विषाक्तता से उपजा रोग।

आधार जांच दर, कथित एज-एडजस्टेड इंसिडेंस रेट' (एएआईआर)- जो कि विविधितापूर्ण आबादी के आंकड़ा आधारित तुलनात्मक अध्ययन करने का बेस्ट पैमाना है, दर्शाता है कि भ्रांति किस तेज़ी से फीकी पड़ जाती है। आईसीएमआर-एनसीडीआईआर (2025-26) के डेटा के आधार पर, बठिंडा क्षेत्र का कैंसर एएआईआर सूचकांक प्रति 1,00,000 लोगों पर 125 मामले है। हालांकि यह राष्ट्रीय औसत (लगभग 100) से थोड़ा ज़्यादा है, लेकिन यह दिल्ली (146) या केरल (135) की तुलना में काफ़ी कम है। मिज़ोरम में एएआईआर बहुत अधिक बढ़कर 256 है। अगर 125 के आंकड़े के साथ बठिंडा 'कैंसर बेल्ट' कहलाता है, तब तो 256 दर के साथ, मिज़ोरम उस हिसाब से 'राष्ट्रीय आपदा' होना चाहिए, फिर भी निशाना केवल पंजाब को ही बनाया जा रह है।

इस संकट में सबसे ज़्यादा नज़रअंदाज़ किया गया पहलू, विरोधाभासी रूप से, स्वास्थ्य और पोषण के क्षेत्र में पंजाब की शानदार उपलब्धि है। 2006-2010 के दौर में, जब वायरल हुई वे डॉक्यूमेंट्रीज रिलीज़ हुई थीं, पंजाब तब भारत के सबसे समृद्ध राज्यों में से एक था, जहां की औसत जीवन प्रत्याशा 70.6 साल थी-जो तब राष्ट्रीय औसत से 4.5 साल ज़्यादा थी। भले उसके बाद जीवन प्रत्याशा का यह राज्य-राष्ट्रीय अंतर लगातार कम होता गया है-संभवतः वायु प्रदूषण के कारण-फिर भी पंजाब का यह आंकड़ा अभी भी राष्ट्रीय औसत से ऊपर है। पंजाब में जीवन प्रत्याशा का ज़्यादा होना किसी 'किस्मत' जनित आनुवंशिकी की वजह से नहीं, बल्कि यह पंजाबी समुदाय में मौजूद 'परमार्थ संस्कृति' का नतीजा है, जो 'लंगर' और 'सेवा' को प्राथमिकता देती है। इसका अन्य कारण है 2005 के बाद छपे लेख और 2010 में बेहद लोकप्रिय हुई डॉक्यूमेंट्री।

कैंसर बुढ़ापे की बीमारी है। उदाहरण के लिए, जिस गांव में 80 साल से अधिक उम्र के लोग ज़्यादा होंगे, वहां आसपास के गांवों की अपेक्षा कैंसर के मामले ज़्यादा होंगे, भले ही वहां का पानी उनसे ज़्यादा साफ़ हो। जिन राज्यों में लोगों की औसत उम्र कम है, वहां कई लोग 'कैंसर की उम्र' तक पहुंचने से पहले ही संक्रामक बीमारियों अथवा हृदय रोगों से मर जाते हैं। गौरतलब है कि जिन राज्यों में कैंसर की एएआईआर दर पंजाब से ज़्यादा है (जैसे केरल, दिल्ली और मिज़ोरम), वहां लोगों की औसत उम्र भी अधिक है।

'कैंसर बेल्ट' वाली बात को महज एक बढ़ा-चढ़ाकर पेश की गई कहानी जानकर, आखिरकार हम अपना वैज्ञानिक ध्यान और संसाधन इस इलाके की वास्तविक स्वास्थ्य एवं पर्यावरण से जुड़ी समस्याओं पर लगा सकेंगे। इनमें हेपेटाइटिस सी, मेटाबॉलिक सिंड्रोम, फैटी लिवर रोग, वायु प्रदूषण, शहरी कचरे का सही निपटान, भारी धातुओं के ज़हर और एंडोक्राइन को बिगाड़ने वाले 'नॉनिलफेनोल' जैसे रसायनों की उच्च मात्रा शामिल है।

पिछले कई सालों से, पंजाब भारत में हेपेटाइटिस सी संक्रमण का मुख्य केंद्र बना हुआ है; भारत भर में हेपेटाइटिस सी के कुल प्रमाणिक मामलों के लगभग 35 प्रतिशत पंजाब के ही होते हैं। 44.2 प्रतिशत सूचकांक के साथ, पंजाब भारत में मोटापे का मुख्य केंद्र है, जबकि 53 प्रतिशत के साथ चंडीगढ़ में फैटी लिवर रोग के सर्वाधिक मामले पाए जाते हैं। पंजाब वास्तव में स्वास्थ्य एवं पर्यावरण से जुड़ी कई बड़ी समस्याओं का मुख्य केंद्र है-लेकिन आंकड़े साफ़ दर्शाते हैं कि कैंसर उनमें से एक नहीं है। जहां हम पंजाब की कमियों को छिपाएं नहीं वहीं ठीक इसी वक्त, बीमारियों से जुड़े आंकड़ों में पूरी सच्चाई सामने लाने की उम्मीद भी रखें। हम आंकड़ों के मायाजाल से निर्मित भ्रांत धारणाओं के आधार पर अपनी क्षेत्रीय पहचान को आकार देना स्वीकार नहीं कर सकते।

अब समय आ गया है कि हम तार्किक विमर्श और ठोस, अकाट्य आंकड़ों का उपयोग करके, पिछले 20 वर्षों से चली आ रही भ्रामक मिथक को तोड़ें और 'कैंसर बेल्ट' तथा 'कैंसर ट्रेन' से जुड़े प्रतिक्रियात्मक चक्र को समाप्त करें। आइए, हम स्वास्थ्य और स्वस्थ पर्यावरण के प्रति एक साझा दृष्टिकोण अपनाकर सक्रिय 'नया भारत' आंदोलन का नेतृत्व करें; एक ऐसा दृष्टिकोण जो हमारे आधुनिक वैज्ञानिक ज्ञान को हमारी प्राचीन तार्किक क्षमता-विशेष रूप से 'आलोचनात्मक सोच' की शक्ति-के साथ एकीकृत करने वाला हो।

प्रेरणा

प्रभु और भक्त का अद्वैत रहस्य: हनुमान की विनम्रता और राम का प्रेम

भारतीय आध्यात्मिक परंपरा में भगवान और भक्त के संबंध को केवल पूजा-पाठ तक सीमित नहीं माना गया है। यह संबंध प्रेम, समर्पण, विश्वास और आत्मिक एकत्व की अनुभूति से जुड़ा हुआ होता है। जब कोई भक्त अपने जीवन को पूरी तरह भगवान की सेवा में समर्पित कर देता है, तब उसके और भगवान के बीच का संबंध अत्यंत गहरा और अद्भुत हो जाता है। हमारे पुराणों और रामायण जैसे महान ग्रंथों में ऐसे अनेक प्रसंग मिलते हैं, जो इस दिव्य संबंध की महिमा को उजागर करते हैं। इनमें से एक अत्यंत भावपूर्ण प्रसंग उस समय का है जब लंका विजय के बाद प्रभु श्रीराम अयोध्या लौटे और वहां एक भव्य भोज का आयोजन किया गया। इस घटना में भक्त और भगवान के संबंध का ऐसा सुंदर संदेश छिपा हुआ है, जो आज भी भक्ति के मार्ग पर चलने वालों को प्रेरणा देता है।

जब लंका पर विजय प्राप्त कर प्रभु श्रीराम माता सीता और लक्ष्मण के साथ अयोध्या लौटे, तब पूरे नगर में आनंद की लहर दौड़ गई। अयोध्या के लोगों ने अपने प्रिय राजा के स्वागत में पूरे नगर को सजाया। हर घर में दीप जलाए गए, मंदिरों में घंटियां बजने लगीं और चारों ओर मंगल गीत गूंजने लगे। वर्षों के वनवास और कठिन संघर्ष के बाद प्रभु की वापसी ने लोगों के हृदय को अपार खुशी से भर दिया। इस पावन अवसर पर अयोध्यावासियों ने प्रभु और उनके साथ आए सभी अतिथियों के सम्मान में एक विशाल और भव्य भोज का आयोजन किया।

इस भोज की व्यवस्था का कार्य वानर सेना के सबसे समर्पित और प्रिय सेवक हनुमान जी को सौंपा गया। हनुमान जी के लिए सेवा ही सबसे बड़ा धर्म था। वे अत्यंत लगन और सावधानी से इस आयोजन की व्यवस्था कर रहे थे। उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि सभी वानरों और अतिथियों के बैठने के लिए उचित स्थान हो, किसी को किसी प्रकार की असुविधा न हो और सबको प्रेमपूर्वक भोजन मिले। वे स्वयं इधर-उधर दौड़कर हर छोटी-बड़ी व्यवस्था को देख रहे थे। उनका हृदय इस बात से प्रसन्न था कि उन्हें अपने प्रभु और उनके अतिथियों की सेवा करने का अवसर मिला है।

जब सभी वानर और अतिथि भोजन के लिए बैठ गए और व्यवस्था पूरी हो गई, तब हनुमान जी प्रभु श्रीराम के पास पहुंचे। वे यह देखने आए थे कि कहीं व्यवस्था में कोई कमी तो नहीं रह गई। प्रभु श्रीराम अपने प्रिय भक्त की इस सेवा भावना को देखकर अत्यंत प्रसन्न थे। उन्होंने प्रेम और स्नेह से हनुमान की ओर देखा और कहा कि हनुमान भी उनके साथ बैठकर भोजन करें।

प्रभु के इस स्नेहपूर्ण आदेश को सुनकर हनुमान जी कुछ क्षण के लिए मौन हो गए। उनके मन में एक गहरी दुविधा उत्पन्न हो गई। वे स्वयं को प्रभु का सेवक मानते थे और सेवक के लिए अपने स्वामी के साथ समान स्थान पर बैठना उन्हें उचित नहीं लगता था। उनके मन में प्रभु के प्रति इतना सम्मान और श्रद्धा थी कि वे स्वयं को उनके चरणों की धूल के समान भी नहीं समझते थे। वे सोचने लगे कि जिस प्रभु की सेवा करना ही उनके जीवन का उद्देश्य है, उनके साथ बैठकर भोजन करना कैसे संभव हो सकता है।

हनुमान जी के मन में चल रही यह दुविधा उनके चेहरे पर स्पष्ट दिखाई दे रही थी। प्रभु श्रीराम अंतर्यामी थे। वे अपने भक्त के मन की हर भावना को भली-भांति समझते थे। उन्होंने तुरंत ही हनुमान के मन का भाव जान लिया। प्रभु जानते थे कि हनुमान का संकोच अहंकार से नहीं, बल्कि गहरी भक्ति और विनम्रता से उत्पन्न हुआ है। वे अपने भक्त की इस भावना का सम्मान भी करना चाहते थे और साथ ही उसे अपने प्रेम का अनुभव भी कराना चाहते थे।

तभी प्रभु श्रीराम ने एक अद्भुत उपाय किया। उनके सामने केले का एक पत्ता बिछा था, जिस पर भोजन परोसा गया था। प्रभु ने अपनी मध्यमा अंगुली से उस पत्ते के बीच में एक हल्की रेखा खींच दी। यह रेखा इतनी सूक्ष्म थी कि पत्ता वास्तव में एक ही था, लेकिन देखने में ऐसा लगता था जैसे वह दो भागों में विभाजित हो गया हो। इसके बाद प्रभु ने एक भाग में स्वयं भोजन करना प्रारंभ किया और दूसरे भाग में हनुमान को बैठाकर भोजन करने के लिए कहा।

इस दृश्य को देखकर वहां उपस्थित सभी लोग भावविभोर हो गए। यह केवल एक साधारण घटना नहीं थी, बल्कि इसके भीतर एक गहरा आध्यात्मिक संदेश छिपा हुआ था। प्रभु श्रीराम का यह संकेत था कि भक्त और भगवान के बीच मूल रूप से कोई भेद नहीं होता। दोनों का अस्तित्व उसी परम चेतना से जुड़ा होता है। जब भक्त अपने अहंकार को पूरी तरह समाप्त कर देता है और पूर्ण समर्पण के साथ प्रभु की भक्ति करता है, तब वह उसी दिव्य सत्ता के निकट पहुंच जाता है।

दूसरी ओर हनुमान जी का भाव यह था कि जीव और परमात्मा के बीच सेवा और मर्यादा का संबंध भी होता है। भक्त का कर्तव्य है कि वह प्रभु की सेवा करे, उनके चरणों में अपना जीवन अर्पित करे और विनम्रता के साथ उनकी आज्ञा का पालन करे। यही कारण है कि हनुमान जी स्वयं को सदैव "राम का दास" कहते थे। उनके लिए प्रभु की सेवा ही सबसे बड़ा सुख और सबसे बड़ा धर्म था।

इस प्रकार इस प्रसंग में द्वैत और अद्वैत दोनों का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। एक ओर प्रभु का संदेश है कि आत्मा और परमात्मा अंततः एक ही सत्य के दो रूप हैं, वहीं दूसरी ओर भक्त का भाव यह है कि उस सत्य तक पहुंचने का मार्ग भक्ति, सेवा और विनम्रता से होकर गुजरता है। यही वह आध्यात्मिक सिद्धांत है जिसे भारतीय दर्शन में "द्वैत में अद्वैत" कहा गया है।

यह प्रसंग हमें यह भी सिखाता है कि सच्ची भक्ति केवल पूजा या अनुष्ठानों से नहीं आती। इसके लिए आवश्यक है कि मन में विनम्रता, प्रेम और सेवा का भाव हो। जब व्यक्ति अपने अहंकार को त्यागकर दूसरों की भलाई के लिए कार्य करने लगता है, तब उसके भीतर एक नई आध्यात्मिक चेतना जागृत होने लगती है। यही कारण है कि हनुमान जी को भक्ति, शक्ति और विनम्रता का सर्वोच्च प्रतीक माना जाता है।

आज के समय में जब मनुष्य अक्सर अहंकार, स्वार्थ और प्रतिस्पर्धा में उलझा रहता है, तब यह प्रसंग हमें जीवन का एक महत्वपूर्ण संदेश देता है। यह बताता है कि सच्चा सुख और शांति सेवा, प्रेम और समर्पण में ही निहित है। यदि मनुष्य अपने जीवन में इन गुणों को अपनाए, तो वह न केवल स्वयं के जीवन को सार्थक बना सकता है, बल्कि समाज में भी सकारात्मक परिवर्तन ला सकता है।

एआई के उपयोग से खरीदारी रोजमर्रा का अनुभव बन रहा बेहतर

पिछले कुछ वर्षों में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) महज एक चर्चित शब्द नहीं रहा, बल्कि यह तकनीक से जुड़ी बातचीत का केंद्र बन गया है। हाल ही में आयोजित सीईएस (कंज्यूमर इलेक्ट्रानिक्स शो) 2026 यह दिखाता है कि हम कितनी दूर तक पहुंच चुके हैं। अब एआई टीवी और लैपटाप से लेकर घरेलू उपकरणों तक हर श्रेणी का अहम हिस्सा बन चुका है और हर नए संस्करण के साथ ऐसी क्षमताएं सामने ला रहा है, जो रोजमर्रा के अनुभव को वास्तव में बेहतर बनाती हैं।

भारत में यह बदलाव एक दिलचस्प रूप ले चुका है। खरीदारी के फैसले लेते समय भारतीय ग्राहक हमेशा से सोच-समझकर और गहन रिसर्च करने वाले रहे हैं। अब एआई उनका रिसर्च पार्टनर बनता जा रहा है, जो जटिलताओं को आसान करता है, सही विकल्प सामने लाता है और आत्मविश्वास के साथ फैसलों की पुष्टि करता है। आज कोई व्यक्ति जब टीवी खरीदने जाता है, तो वह तकनीकी स्पेसिफिकेशंस की भीड़ में नहीं उलझता और न ही थकाने वाली सेल्स पिच सुनता है। इसके बजाय, वह एक एप पर कुछ आसान सवालों के जवाब देता है- कमरा कितना बड़ा है, आप मुख्य रूप से क्या देखते हैं, जगह कितनी रोशनी वाली है। एआई इन जानकारियों को तुरंत प्रोसेस करता है और हजारों विकल्पों में से केवल वही माडल छांट देता है जो उनकी जरूरतों के अनुरूप हों।

एक वर्किंग प्रोफेशनल को ही ले लीजिए, जो अपना लैपटॉप अपग्रेड करना चाहता है। वह अपने उपयोग के बारे में बताता है- वीडियो एडिटिंग, क्लाइंट प्रेजेंटेशन, बार-बार यात्रा आदि। ऐसे में एआई स्पेसिफिकेशन का मिलान करने के साथ ही संदर्भ को भी समझता है। वह ऐसे लैपटॉप सुझाता है जो क्रिएटिव कार्यों के लिए अनुकूल हों, जिनकी बैटरी लाइफ बेहतरीन हो, वजन संतुलित हो और साथ ही वह संभावित समझौतों को भी साफ-साफ बताता है। इस प्रकार, विजुअल सर्च एक और बड़ी क्रांति है। किसी दोस्त के घर टीवी सेटअप देखा और पसंद आया? उसकी फोटो खींचिए। एआई उस मॉडल की पहचान करता है, मिलते-जुलते विकल्प दिखाता है, कीमतों की तुलना करता है और यह भी बताता है कि आम तौर पर लोग उसके साथ और क्या खरीदते हैं।

गुणवत्ता में निवेश : अब एक ज्यादा आत्मविश्वासी खरीदार सामने आ रहा है। अब ग्राहक केवल ब्रांड के नामों के भरोसे नहीं, बल्कि स्पेसिफिकेशंस की तुलना करके फैसले ले रहे हैं। गुणवत्ता में निवेश करने की इच्छा भारतीय उपभोक्ताओं में पिछले कुछ वर्षों से मौजूद रही है। आज इसके साथ सावधानी भी जुड़ गई है। केवल दिखावे के लिए फीचर्स और स्पेसिफिकेशन की भरमार अब काम नहीं करती। अनिश्चितता को कम करके एआई भारत के स्वभाव से ही सतर्क और मेहनती खरीदारों को प्रीमियम टेक्नोलाजी में ज्यादा भरोसे के साथ निवेश करने में मदद कर रहा है।

शायद सबसे बड़ा बदलाव यह है कि अब एआई ग्राहक फीडबैक को कैसे समझता और प्रस्तुत करता है। पहले जहां खरीदारों को सैकड़ों रिव्यू स्क्राल करने पड़ते थे, वहीं अब हजारों असली यूजर अनुभवों से निकली एक साफ और समेकित जानकारी उन्हें एक नजर में मिल जाती है। इसे हेडफोन जैसे आम प्रोडक्ट के उदाहरण से समझा जा सकता है। कई रिव्यू में ग्राहक अक्सर साउंड क्वालिटी, बिल्ड क्वालिटी और नाइज कैंसिलेशन की तारीफ करते नजर आते हैं, तो बैटरी लाइफ का भी उसमें जिक्र होता है। वहीं 'वैल्यू फार मनी' को लेकर राय अलग-अलग होती है, जो अलग-अलग कीमतों पर ग्राहकों की अलग अपेक्षाओं को दर्शाती है। इस तरह पेश किए जाने पर रिव्यू शोर नहीं लगते। वे एक मार्गदर्शन बन जाते हैं, जो ग्राहकों को फैसला लेने से पहले प्रोडक्ट की खूबियां, सीमाएं और असल जिंदगी में उसका प्रदर्शन समझने में मदद करते हैं।

आगे की राह : आने वाले समय में एआई केवल ग्राहकों को प्रोडक्ट खोजने में ही मदद नहीं करेगा, बल्कि उनकी जरूरतों का पहले से ज्यादा सटीक अंदाजा भी लगाएगा। यह विकल्पों के बीच समझौते को स्पष्ट करेगा और असली अनुभवों के आधार पर फैसलों की पुष्टि करेगा। दावों के पीछे की सच्चाई समझना, सही तुलना करना और असली मूल्य पहचानना जैसी जो समझ अनुभवी खरीदारों को वर्षों में विकसित होती थी, अब वह स्मार्टफोन रखने वाले हर व्यक्ति के लिए उपलब्ध हो रही है। भारतीय उपभोक्ता अब यह नहीं पूछ रहे हैं कि एआई पर भरोसा किया जाए या नहीं, वे इसे पहले ही अपना चुके हैं।

जैसे-जैसे एआई खोजने, तुलना करने और फैसला लेने के तरीकों को नया रूप दे रहा है, वैसे-वैसे वह सूचना संबंधी बढ़त, जो कभी कुछ चुनिंदा लोगों तक सीमित थी, अब खत्म होती जा रही है। भविष्य ऐसा नहीं है जहां एआई हमारे लिए फैसले करे, बल्कि ऐसा है जहां एआई सोच-समझकर फैसला लेने वाले इंसानों को अपने लिए बेहतर चुनाव करने की ताकत देता है। जिस बाजार में हमेशा से जानकारी के आधार पर निर्णय लेने को महत्व दिया गया है, वहां बेहतर खरीदारी का मतलब है सही इरादे के साथ ज्यादा समझदार टूल्स का इस्तेमाल।

अभियान

सत्य, कल्याण और सौंदर्य की अंतःयात्रा: आत्मप्रकाश से जीवन की दिव्यता तक

भारतीय सनातन चिंतन में कुछ शब्द ऐसे हैं जो केवल शब्द नहीं, बल्कि जीवन और अस्तित्व के गहनतम सत्य को व्यक्त करने वाले सूत्र हैं। ऐसे ही तीन अत्यंत पवित्र और अर्थपूर्ण शब्द हैं—सत्यम्, शिवम् और सुंदरम्। जब इन शब्दों का उच्चारण होता है तो मन में एक दिव्य शांति, पूर्णता और संतोष की अनुभूति होती है। ये शब्द मानो मानव जीवन के आध्यात्मिक शिखर का संकेत देते हैं। हालांकि यह रोचक तथ्य है कि भारतीय वाङ्मय में ये तीनों शब्द एक साथ बहुत कम मिलते हैं, फिर भी वेदों, उपनिषदों और पुराणों में अलग-अलग रूपों में इनकी महिमा का अत्यंत गूढ़ और व्यापक वर्णन किया गया है। इन तीनों शब्दों का अर्थ केवल दार्शनिक नहीं, बल्कि जीवन को दिशा देने वाला भी है।

सत्यम् का अर्थ है—वह जो सदा एक जैसा रहता है, जो कभी बदलता नहीं, जो नित्य और शाश्वत है। सत्य केवल किसी घटना का तथ्य मात्र नहीं है, बल्कि वह अस्तित्व का मूल तत्व है। जो सृष्टि के प्रारंभ से है और सृष्टि के अंत तक रहेगा, वही सत्य है। यही कारण है कि भारतीय दर्शन में सत्य को परम सत्ता का स्वरूप माना गया है। जब कहा जाता है कि "सत्य की ही विजय होती है", तो उसका आशय यह नहीं होता कि सत्य केवल किसी विवाद या संघर्ष में जीत जाता है, बल्कि यह संकेत है कि अंततः वही टिकता है जो सत्य है। असत्य चाहे कुछ समय के लिए प्रभावी दिखाई दे, पर वह स्थायी नहीं होता। फिर भी मन में एक प्रश्न सहज ही उठता है कि यदि सत्य सदा विजयी है, तो फिर हर युग में, हर काल में मनुष्यों को सत्य की स्थापना के लिए संघर्ष क्यों करना पड़ता है। यदि सत्य अटल और शाश्वत है, तो संसार में असत्य का प्रभाव बार-बार क्यों दिखाई देता है। यह प्रश्न मानव चिंतन को गहराई से स्पर्श करता है। इसका उत्तर यह है कि सत्य स्वयं तो अटल है, किंतु मनुष्य की चेतना और समझ बदलती रहती है। जब मनुष्य अपने स्वार्थ, मोह या अज्ञान में पड़ जाता है, तब वह सत्य से दूर हो जाता है। तब उसे पुनः सत्य की ओर लौटने के लिए प्रयास करना पड़ता है। इसलिए हर युग में सत्य की स्थापना का प्रयास होता है।

सत्यम् के साथ जब शिवम् शब्द जुड़ता है, तब उसका अर्थ और भी व्यापक हो जाता है। शिवम् का अर्थ है—कल्याणकारी, शुभ और मंगलकारी। जो सबके हित में हो, जो जीवन को उन्नति और संतुलन की दिशा में ले जाए, वही शिव है। वैदिक साहित्य में 'शिव' शब्द का प्रयोग अनेक स्थानों पर कल्याणकारी अर्थ में हुआ है। इसका संकेत यह है कि परम सत्य केवल अस्तित्व का आधार ही नहीं, बल्कि समस्त सृष्टि के कल्याण का स्रोत भी है। जो तत्व सबके लिए मंगलकारी है, वही शिव है। यही कारण है कि भारतीय परंपरा में शिव को केवल एक देवता के रूप में नहीं, बल्कि कल्याण और संतुलन के प्रतीक के रूप में देखा जाता है। जब कोई व्यक्ति सत्य के मार्ग पर चलता है, तो उसके जीवन में स्वाभाविक रूप से कल्याणकारी भाव उत्पन्न होने लगते हैं। वह केवल अपने हित के बारे में नहीं सोचता, बल्कि सबके हित के लिए कार्य करने की भावना उसके भीतर जागृत हो जाती है। यही भावना उसे शिवत्व की ओर ले जाती है। इस अवस्था में मनुष्य का जीवन केवल व्यक्तिगत उपलब्धियों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वह समाज और प्रकृति के लिए भी कल्याणकारी बन जाता है।

तीसरा शब्द है—सुंदरम्। सामान्य रूप से सुंदर शब्द का संबंध बाहरी आकर्षण से जोड़ा जाता है, किंतु 'सुंदरम्' का अर्थ इससे कहीं अधिक गहरा है। सुंदरम् वह है जिसमें संतुलन, सामंजस्य और आंतरिक प्रकाश हो। जब सत्य और कल्याण एक साथ मिलते हैं, तब जीवन में जो सौंदर्य प्रकट होता है, वही सुंदरम् है। यह सौंदर्य केवल रूप में नहीं, बल्कि विचार, आचरण और व्यवहार में दिखाई देता है।

यदि सरल शब्दों में समझा जाए, तो सत्यम्, शिवम् और सुंदरम् का अर्थ यह है कि जो सत्य है वही कल्याणकारी है और जो कल्याणकारी है वही सुंदर है। सत्य कभी किसी के लिए हानिकारक नहीं हो सकता, क्योंकि सत्य का स्वभाव ही संतुलन और सामंजस्य है। इसी प्रकार जो वास्तव में कल्याणकारी है, वह स्वाभाविक रूप से सुंदर होता है। यह सौंदर्य बाहरी सजावट से नहीं, बल्कि आंतरिक पवित्रता से उत्पन्न होता है। मनुष्य के जीवन में समस्या तब उत्पन्न होती है जब वह अपने निजी सत्य को ही अंतिम सत्य मान लेता है। कभी-कभी जो हमें सही लगता है, वह सबके लिए हितकारी नहीं होता। ऐसी स्थिति में मनुष्य अक्सर अपने स्वार्थ या अहंकार के कारण किसी असत्य को भी सत्य के रूप में प्रस्तुत करने लगता है। यही वह स्थिति है जहां से विकार और भ्रम का जन्म होता है। जब सत्य ही विकृत हो जाता है, तब उससे कल्याण की अपेक्षा करना संभव नहीं रहता। और जब कल्याण ही नहीं है, तो सौंदर्य भी समाप्त हो जाता है। उपनिषदों का संदेश है कि सत्य सदैव से विद्यमान है और सदैव रहेगा। शरीर, विचार, वस्तुएं और परिस्थितियां बदलती रहती हैं, इसलिए वे सत्य नहीं हैं। जो बदलता है वह अस्थायी है। अध्यात्म हमें यह समझाने का प्रयास करता है कि हमें उन चीजों में उलझने की आवश्यकता नहीं है जो नश्वर हैं। हमें उस तत्व को जानने की यात्रा करनी चाहिए जो शाश्वत है। यही यात्रा अध्यात्म की वास्तविक यात्रा है।

इस संदर्भ में आत्मा का प्रकाश अत्यंत महत्वपूर्ण है। शरीर बदलता है, परिस्थितियां बदलती हैं, किंतु आत्मा का प्रकाश नहीं बदलता। यही प्रकाश सत्य का प्रतीक है। जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश सदा एक समान रहता है, उसी प्रकार आत्मा का प्रकाश भी स्थिर और शाश्वत होता है। मनुष्य के भीतर जो दया, करुणा, प्रेम और धर्म के भाव उत्पन्न होते हैं, वे उसी आत्मिक प्रकाश से प्रेरित होते हैं। जब हम प्रकृति को देखते हैं, तब भी सत्यम्, शिवम् और सुंदरम् का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। जल जीवन का आधार है। वह सबके लिए समान रूप से उपयोगी है। इसलिए वह सत्य भी है और कल्याणकारी भी। इसी प्रकार वायु जीवन की प्रत्येक श्वास में उपस्थित है और बिना किसी भेदभाव के सबका हित करती है। सूर्य की किरणें पूरी पृथ्वी को प्रकाश और ऊर्जा देती हैं। यह सब प्रकृति के ऐसे रूप हैं जिनमें सत्य, कल्याण और सौंदर्य तीनों एक साथ दिखाई देते हैं। प्रकृति के इन रूपों में जो सौंदर्य दिखाई देता है, वह केवल बाहरी दृश्य नहीं है, बल्कि उसमें छिपी हुई कल्याणकारी ऊर्जा का भी परिणाम है। नदी का प्रवाह, हवा का स्पर्श, सूर्य का प्रकाश—ये सभी हमें यह अनुभव कराते हैं कि जब कोई तत्व सबके हित में कार्य करता है, तब उसमें स्वाभाविक रूप से सुंदरता प्रकट होती है। मनुष्य के भीतर भी ऐसा ही आत्मप्रकाश विद्यमान है। यह वह दिव्य प्रकाश है जो हर व्यक्ति के भीतर छिपा हुआ है। अंतर केवल इतना है कि अधिकांश लोग उसे पहचान नहीं पाते। जब मनुष्य अपने भीतर झांकने का प्रयास करता है, जब वह अपने विचारों और भावनाओं को शुद्ध करने का प्रयास करता है, तब धीरे-धीरे यह आत्मप्रकाश प्रकट होने लगता है। जब यह आत्मिक प्रकाश प्रकट होता है, तब उसका प्रभाव व्यक्ति के व्यक्तित्व पर भी दिखाई देने लगता है। उसके चेहरे पर एक शांत आभा दिखाई देती है, उसके व्यवहार में सरलता और मधुरता आ जाती है। उसका जीवन केवल व्यक्तिगत इच्छाओं तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वह दूसरों के जीवन में भी प्रकाश फैलाने लगता है। यही आत्मप्रकाश वास्तव में सत्यम्, शिवम् और सुंदरम् की अनुभूति है। जब मनुष्य सत्य के निकट आता है, तब उसके भीतर कल्याणकारी भाव जागते हैं। और जब उसके भीतर कल्याण की भावना प्रबल हो जाती है, तब उसके जीवन में एक अद्भुत सुंदरता प्रकट होती है। अंततः यही जीवन का वास्तविक उद्देश्य है कि मनुष्य अपने भीतर के सत्य को पहचान सके, उस सत्य के आधार पर कल्याणकारी जीवन जी सके और अपने आचरण से संसार में सुंदरता का प्रसार कर सके। जब ऐसा होता है, तब मनुष्य का जीवन केवल व्यक्तिगत सफलता तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वह संपूर्ण सृष्टि के लिए प्रेरणा का स्रोत बन जाता है। यही वह अवस्था है जहां आत्मप्रकाश से कल्याणकारी जीवन की यात्रा पूर्ण होती है और मनुष्य अपने अस्तित्व की वास्तविक दिव्यता को अनुभव करता है।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

‘विकसित गुजरात@2047’ के विजन के साथ श्रम, कौशल विकास और रोजगार विभाग का वर्ष 2026-27 का 2902 करोड़ रुपए का ऐतिहासिक बजट : मंत्री श्री कुंवरजीभाई बावळिया

(जीएनएस)। गांधीनगर : श्रम, कौशल विकास और रोजगार मंत्री श्री कुंवरजीभाई बावळिया ने रविवार को गांधीनगर में एक संवाददाता सम्मेलन में कहा कि मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल और उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी के नेतृत्व में राज्य सरकार ने युवाओं के कौशल विकास और श्रमिकों के सर्वांगीण कल्याण के लिए मजबूत संकल्प किया है। इस संदर्भ में श्रम, कौशल विकास और रोजगार विभाग के लिए वर्ष 2026-27 के बजट में 2902 करोड़ रुपए की भारी धनराशि का प्रावधान किया गया है। इस प्रकार, यह बजट विकसित गुजरात के जरिए प्रधानमंत्री के ‘विकसित भारत@2047’ और ‘आत्मनिर्भर भारत’ के विजन को साकार करने में अहम भूमिका निभाएगा।

श्रम, कौशल विकास और रोजगार विभाग के वर्ष 2026-27 के बजट के मुख्य मुद्दे इस प्रकार हैं :

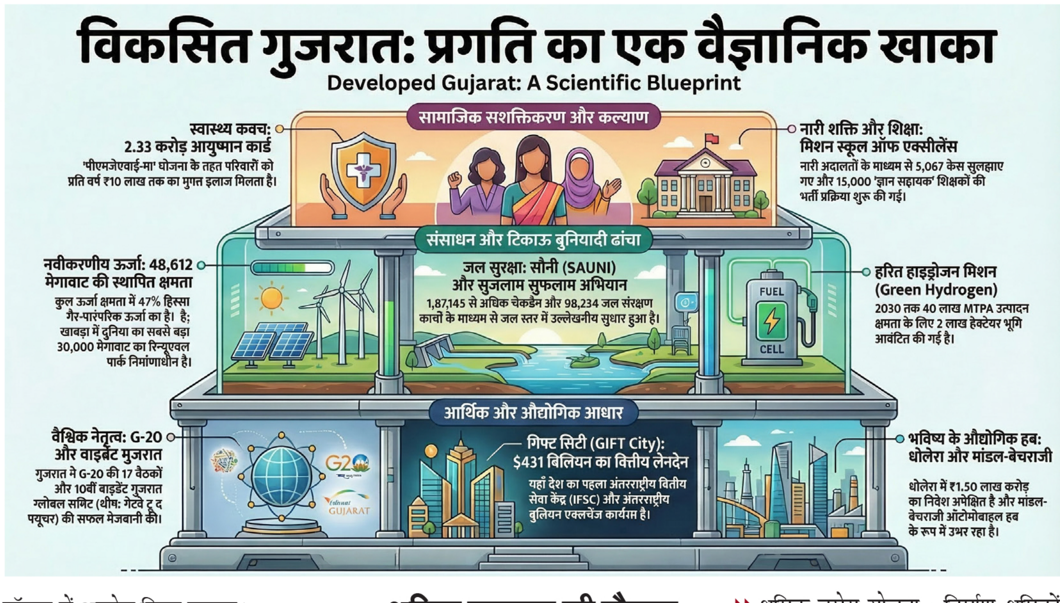

नई योजनाएं एवं प्रावधान

▸▸ नमो गुजरात कौशल्य एवं रोजगार मिशन : युवाओं की रोजगार क्षमता बढ़ाने के लिए 226 करोड़ रुपए का प्रावधान।

▸▸ पीएम सेतु योजना : 200 करोड़ रुपए के खर्च से आईटीआई को हब-एंड-स्पोक मॉडल में अपग्रेड किया जाएगा।

▸▸ नमो कौशल्य लक्ष्मी योजना : आईटीआई में अध्ययनरत छात्राओं को प्रोत्साहन देने के लिए 40 करोड़ रुपए का आवंटन। 1 वर्ष के कोर्स के लिए 15,000 रुपए और 2 वर्ष के कोर्स के लिए 24,000 रुपए की सहायता दी जाएगी।

श्रमिक कल्याण की मौजूदा योजनाओं का विस्तार

▸▸ श्रमिक अन्नपूर्णा योजना : 200 करोड़ रुपए के आवंटन के साथ 300 नए अन्नपूर्णा बूथ शुरू करने का आयोजन है, जहां 5 रुपए में भोजन मिलता है।

▸▸ श्रमिक बसेरा योजना : निर्माण श्रमिकों को रियायती दरों पर रहने की सुविधा मुहैया कराने के लिए 150 करोड़ रुपए का प्रावधान।

▸▸ धन्वंतरि आरोग्य रथ : श्रमिकों की स्वास्थ्य सेवाओं के लिए 50 और नए रथ शामिल करने के लिए 160 करोड़ रुपए का आवंटन।

▸▸ दुर्घटना बीमा : निर्माण श्रमिक की मृत्यु या स्थायी विकलांगता के मामले में 3.5 लाख रुपए की सहायता दी जाती है।

▸▸ अगरिया आवास योजना : नमक अगरियाओं (नमक उत्पादन करने वाले श्रमिक) के लिए सोलर पैनल और बुनियादी सुविधाओं युक्त आवासों के लिए 25 करोड़ रुपए का प्रावधान।

▸▸ सिलिकोसिस रोग से पीड़ित व्यक्तियों को निदान (डायग्नोसिस) के समय 3 लाख रुपए और मृत्यु के बाद 4 लाख रुपए की सहायता परिजनों को दी जाएगी।

विभाग की महत्वपूर्ण उपलब्धियां

▸▸ राज्य में संचालित कुल 559 आईटीआई में 2,18,516 सीटों की प्रशिक्षण क्षमता है, जिसमें महिलाओं के लिए 11,448 सीटें और दिव्यांगों के लिए 15 समर्पित आईटीआई संचालित हैं।

▸▸ वर्ष 2025-26 के अंतर्गत फरवरी-2026 तक 1215 भर्ती मेलों के जरिए 2,60,878 उम्मीदवारों को रोजगार के अवसर प्रदान किए गए।

▸▸ वर्ष 2023-24 के सर्वेक्षण के अनुसार भारत की 3.2 फीसदी बेरोजगारी दर के सापेक्ष गुजरात की दर केवल 1.1 फीसदी है।

▸▸ नागरिक उड्डयन महानिदेशालय (डीजीसीए) द्वारा मान्यता प्राप्त 6 ड्रोन पायलट प्रशिक्षण केंद्रों को मंजूरी मिली है। कौशल्या-द स्किल यूनिवर्सिटी द्वारा 600 से अधिक ड्रोन पायलट और 1200 से अधिक प्रशिक्षुओं को ड्रोन मैन्युफैक्चरिंग का प्रशिक्षण दिया गया है।

▸▸ मुख्यमंत्री स्किल डेवलपमेंट इनिशिएटिव्स के अंतर्गत वर्ष 2025-26 में कुल 4,27,861 प्रशिक्षुओं को प्रशिक्षण दिया गया है।

▸▸ राज्य में कारखाना अधिनियम 1948 के तहत मार्च-2025 के अंत तक पंजीकृत 50,017 कारखानों की संख्या फरवरी-2026 तक बढ़कर 51,033 हो गई है। इस प्रकार, पिछले एक वर्ष में कारखानों की संख्या में 1016 की वृद्धि हुई है।

▸▸ निदेशक, बॉयलर ने गुजरात राज्य में वर्ष 2025 के दौरान कुल 8447 बॉयलर और 339 इकोनोमाइजर का निरीक्षण करके उन्हें प्रमाणित किया। इसके अलावा, कुल 579 नए बॉयलरों और 10 इकोनोमाइजरों का पंजीकरण हुआ है। वर्ष के दौरान प्रमाणित बॉयलरों में कोई दुर्घटना नहीं हुई है।

भविष्य का लक्ष्य

▸▸ ‘विकसित गुजरात@2047’ के लक्ष्य को हासिल करने के लिए कौशल इकोसिस्टम को मजबूत बनाना।

▸▸ अगले 4-5 वर्षों में 60,000 से अधिक लोगों को प्रशिक्षण देने की योजना।

इस संवाददाता सम्मेलन में ग्रामीण विकास राज्य मंत्री श्री संजयसिंह महीड़ा, ग्रामीण विकास सचिव श्री धनंजय द्विवेदी, श्रम, रोजगार और कौशल विकास सचिव श्री लोचन सेहरा, रोजगार एवं प्रशिक्षण निदेशक श्री नितिन सांगवान, श्रम आयुक्त श्री के.डी. लाखाणी सहित कई उच्च अधिकारी उपस्थित रहे।

प्रकृति का अनोखा रहस्य: एशियाई वीवर चींटी से कैंसर के इलाज की नई उम्मीद

(जीएनएस)। शिलॉन्ग। चिकित्सा विज्ञान की दुनिया में एक दिलचस्प और आशाजनक खोज सामने आई है, जिसने कैंसर के इलाज के क्षेत्र में नई संभावनाओं के द्वार खोल दिए हैं। मेघालय स्थित North Eastern Hill University के वैज्ञानिकों ने अपने एक शोध में दावा किया है कि पेड़ों पर घोंसला बनाने वाली एशियाई वीवर चींटी में ऐसे गुण मौजूद हो सकते हैं, जो कैंसर जैसी गंभीर बीमारी से लड़ने में मददगार साबित हो सकते हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार इन चींटियों से तैयार किया गया अर्क कैंसर कोशिकाओं पर प्रभावी तरीके से हमला कर सकता है और शरीर में रोग से लड़ने की क्षमता को बढ़ा सकता है। यह शोध फिलहाल शुरुआती चरण में है, लेकिन इसके नतीजों ने वैज्ञानिक समुदाय को उत्साहित कर दिया है।

इस अध्ययन में शोधकर्ताओं ने जिस चींटी पर विशेष ध्यान केंद्रित किया, वह है Asian Weaver Ant। यह प्रजाति मुख्य रूप से पेड़ों की पत्तियों को जोड़कर अपने घोंसले बनाने के लिए जानी जाती है और पूर्वोत्तर भारत तथा दक्षिण-पूर्व एशिया के कई इलाकों में बड़ी संख्या में पाई जाती है। वैज्ञानिकों ने पाया कि इन चींटियों के शरीर से तैयार किए गए अर्क में ऐसे जैविक तत्व मौजूद हैं, जो कैंसर कोशिकाओं को कमजोर करने और उन्हें नष्ट करने की प्रक्रिया को सक्रिय कर सकते हैं।

शोध के दौरान वैज्ञानिकों ने प्रयोगशाला में चूहों पर परीक्षण किया। इन चूहों में Lymphoma नामक कैंसर की कोशिकाएं मौजूद थीं। जब इन चूहों को एशियाई वीवर चींटी से तैयार किया गया अर्क दिया गया तो परिणाम बेहद उत्साहजनक सामने आए। अध्ययन में पाया गया कि जिन चूहों को यह अर्क दिया गया, उनकी जीवित रहने की संभावना लगभग 73 प्रतिशत तक बढ़ गई। यह आंकड़ा इस बात का संकेत देता है कि इस प्राकृतिक स्रोत में कैंसर से लड़ने की क्षमता मौजूद हो सकती है।

वैज्ञानिकों ने यह भी देखा कि इस अर्क ने कैंसर कोशिकाओं के भीतर एक विशेष जैविक प्रक्रिया को सक्रिय कर दिया। इस प्रक्रिया को Apoptosis कहा जाता है। इस अवस्था में कोशिकाएं स्वयं को नष्ट करने लगती हैं। सरल शब्दों में कहें तो यह शरीर की एक प्राकृतिक प्रक्रिया होती है, जिसमें क्षतिग्रस्त या असामान्य कोशिकाएं खुद ही समाप्त हो जाती हैं। शोधकर्ताओं का कहना है कि जब चींटी का अर्क कैंसर कोशिकाओं पर असर डालता है तो वह उन्हें इस आत्म-विनाश प्रक्रिया की ओर प्रेरित करता है, जिससे कैंसर का फैलाव धीमा हो सकता है।

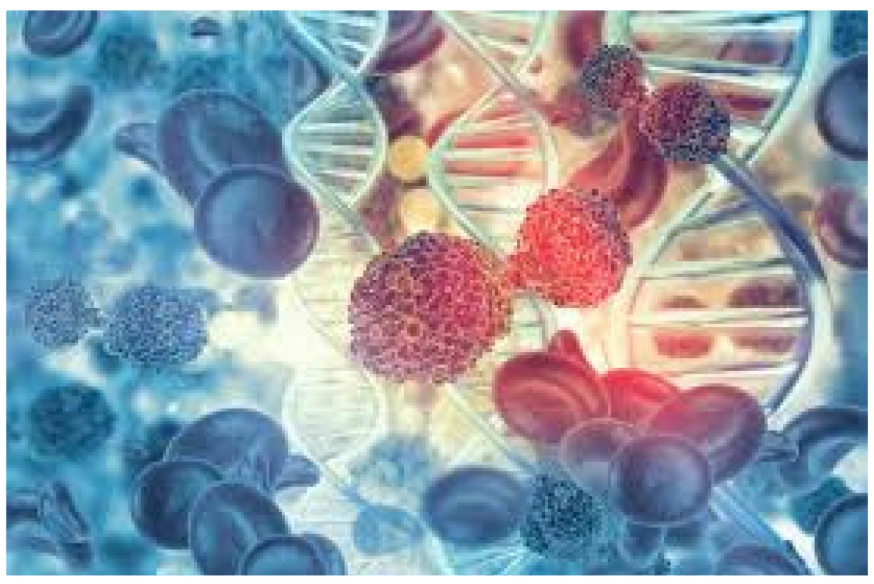

इस शोध का एक और महत्वपूर्ण पहलू यह रहा कि यह अर्क पारंपरिक कैंसर उपचार की तुलना में कम हानिकारक दिखाई दिया। आम तौर पर कैंसर के इलाज में उपयोग की जाने वाली Chemotherapy की दवाएं कई बार शरीर के अन्य अंगों को भी नुकसान पहुंचाती हैं। विशेष रूप से लिवर और किडनी पर इनका नकारात्मक प्रभाव देखा जाता है। लेकिन वैज्ञानिकों ने पाया कि वीवर चींटी के अर्क का प्रभाव अपेक्षाकृत कम जहरीला था और इससे चूहों के लिवर तथा किडनी को बहुत कम नुकसान पहुंचा। यही कारण है कि शोधकर्ताओं का मानना है कि भविष्य में यह एक सुरक्षित और प्राकृतिक विकल्प के रूप में विकसित किया जा सकता है।

अध्ययन में यह भी सामने आया कि सभी प्रकार के अर्क समान रूप से प्रभावी नहीं थे। शोधकर्ताओं ने पाया कि वयस्क यानी कामगार चींटियों से तैयार किया गया इथेनॉल अर्क कैंसर कोशिकाओं के खिलाफ सबसे अधिक प्रभावी साबित हुआ। वैज्ञानिकों का कहना है कि इन कामगार चींटियों के शरीर में कुछ विशेष रासायनिक तत्व मौजूद हो सकते हैं, जो कैंसर कोशिकाओं पर अधिक प्रभाव डालते हैं। इन तत्वों की पहचान और उनके कार्य करने के तरीके को समझने के लिए आगे और विस्तृत शोध की आवश्यकता होगी।

इस खोज का एक और दिलचस्प पहलू यह है कि यह पूरी तरह से नया विचार नहीं है, बल्कि इसका संबंध पारंपरिक ज्ञान से भी जुड़ा हुआ है। पूर्वोत्तर भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया के कई आदिवासी समुदाय सदियों से इन वीवर चींटियों का उपयोग भोजन और पारंपरिक दवाओं के रूप में करते आए हैं। स्थानीय लोग मानते हैं कि इन चींटियों में कई औषधीय गुण मौजूद होते हैं और वे इन्हें विभिन्न स्वास्थ्य समस्याओं में इस्तेमाल करते हैं। वैज्ञानिक अब इसी पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक प्रयोगशाला में परखने की कोशिश कर रहे हैं।

विशेषज्ञों का कहना है कि अक्सर प्रकृति में मौजूद जीव-जंतुओं और पौधों में ऐसे रासायनिक तत्व छिपे होते हैं, जो चिकित्सा के क्षेत्र में क्रांतिकारी साबित हो सकते हैं। कई आधुनिक दवाओं की खोज भी इसी तरह प्राकृतिक स्रोतों से हुई है। इसलिए यह संभव है कि भविष्य में वीवर चींटी से प्राप्त किसी जैविक यौगिक को कैंसर की दवा के रूप में विकसित किया जा सके।

हालांकि वैज्ञानिकों ने यह भी स्पष्ट किया है कि यह शोध अभी प्रारंभिक चरण में है और इसके आधार पर तुरंत किसी निष्कर्ष पर पहुंचना उचित नहीं होगा। फिलहाल यह अध्ययन केवल चूहों पर किया गया है और इंसानों पर इसके प्रभाव को समझने के लिए लंबे समय तक परीक्षण और क्लीनिकल ट्रायल की आवश्यकता होगी। चिकित्सा विज्ञान में किसी भी नई दवा को विकसित करने की प्रक्रिया बेहद जटिल और समय लेने वाली होती है।

फिर भी यह खोज इसलिए महत्वपूर्ण मानी जा रही है क्योंकि इससे यह संकेत मिलता है कि प्रकृति में अभी भी कई ऐसे रहस्य छिपे हुए हैं, जो मानव स्वास्थ्य के लिए लाभकारी हो सकते हैं। यदि आगे के शोधों में भी इसी प्रकार के सकारात्मक परिणाम सामने आते हैं, तो यह कैंसर के इलाज के क्षेत्र में एक बड़ा कदम साबित हो सकता है। विशेष रूप से विकासशील देशों के लिए, जहां महंगी दवाओं और इलाज तक पहुंच सीमित होती है, एक सस्ती और प्राकृतिक दवा की संभावना बेहद महत्वपूर्ण हो सकती है।

कुल मिलाकर, मेघालय के वैज्ञानिकों द्वारा किया गया यह शोध प्रकृति और विज्ञान के मेल का एक रोचक उदाहरण है। यह हमें याद दिलाता है कि पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक अनुसंधान जब साथ मिलकर काम करते हैं तो वे नई खोजों का रास्ता खोल सकते हैं। आने वाले वर्षों में यदि इस दिशा में और गहन अध्ययन होते हैं, तो संभव है कि पेड़ों पर रहने वाली एक छोटी-सी चींटी भविष्य में कैंसर जैसी गंभीर बीमारी से लड़ने में बड़ी भूमिका निभा सके।

नई दिल्ली में आयोजित एमआरओ एक्सपो इंडिया 2026 में गुजरात को ‘एमआरओ स्टेट ऑफ दी ईयर अवॉर्ड’ से सम्मानित किया गया

गुजरात अपनी प्रगतिशील नीतियों एवं रणनीतिक आयोजन के जरिए एमआरओ उद्योग के लिए भात में एक मॉडल स्टेट के रूप में उभरा

(जीएनएस)। गांधीनगर : उड्डयन क्षेत्र में गुजरात की गौरव यात्रा में एक और मील का पत्थर जुड़ गया है। नई दिल्ली में आयोजित एमआरओ एक्सपो इंडिया 2026 (MRO Xpo India 2026) में गुजरात को प्रतिष्ठित ‘एमआरओ स्टेट ऑफ दी ईयर अवॉर्ड’ से सम्मानित किया गया है। विमान के रखरखाव, मरम्मत और ओवरहॉल (एमआरओ) इकोसिस्टम को मजबूत करने और श्रेष्ठ उड्डयन ढांचा खड़ा करने के लिए राज्य के सक्रिय प्रयासों को इस अवॉर्ड से वैश्विक पहचान मिली है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल और उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी के मार्गदर्शन में गुजरात अपनी प्रगतिशील नीतियों और रणनीतिक आयोजन के जरिए एमआरओ

उद्योग के लिए भारत में एक मॉडल स्टेट के रूप में उभरा है। अहमदाबाद के सरदार वल्लभभाई पटेल अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर एमआरओ हैंगर के विकास में गुजरात स्टेट एविएशन इंफ्रास्ट्रक्चर कंपनी लिमिटेड (जीयूजेएसएआईएल-गुजसेल) का अहम योगदान है, जो एयरलाइंस और एमआरओ संस्थाओं को विश्व स्तरीय सुविधाएं प्रदान करती है।

सुविकसित एयरपोर्ट नेटरवक और कुशल मानवबल की उपलब्धता के कारण गुजरात एयरोस्पेस और विमान रखरखाव क्षेत्र में निवेशकों के लिए पसंदीदा स्थल बन गया है। यह अवॉर्ड उड्डयन और एयरोस्पेस क्षेत्रों में नवाचार और उद्योग सहयोग बढ़ाने की गुजरात सरकार की निरंतर प्रतिबद्धता का प्रमाण है।

इस उपलब्धि पर हर्ष व्यक्त करते हुए अधिकारियों ने कहा कि यह मान्यता भारत की उड्डयन क्षमताओं को मजबूत करने और गुजरात को ग्लोबल एविएशन हब के रूप में स्थापित करने के राज्य के विजन को और गति देगी।

गुजरात सरकार की ओर से गुजरात राज्य एविएशन इंफ्रास्ट्रक्चर कंपनी लिमिटेड ने इस कार्यक्रम में भाग लेकर यह प्रतिष्ठित अवॉर्ड स्वीकार किया।

सूरत: श्री कंथा खंड मंडली में 15 करोड़ रुपये की धोखाधड़ी, बैंक प्रबंधक समेत 3 आरोपी गिरफ्तार

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत।

सूरत जिले के ओलपाड तालुका के सरस गांव में स्थित श्री कंथा संभागीय सहकारी चीनी उद्योग समिति लिमिटेड में पीपुल्स को-ओ बैंक के प्रबंधक जतिन नायक के खिलाफ समिति से 15 करोड़ रुपये की धोखाधड़ी करने के आरोप में ओलपाड पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज की गई है। प्राप्त जानकारी के अनुसार, 17/11/2023 को समिति के पास चीनी का स्टॉक 4 हजार 22 क्विंटल होने के बावजूद, पीपुल्स को-ओ बैंक के प्रबंधक ने भौतिक सत्यापन में चीनी का स्टॉक 59402 क्विंटल गलत तरीके से दिखाया और 22/11/2023 को राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम (एनसीडीसी) से समिति के खाते में 9,35,95,000 रुपये का ऋण प्राप्त किया। इसके अलावा, 19/06/2023 को 23800 क्विंटल चीनी स्टॉक पर 6,29,29,000 रुपये का ऋण लिया गया, जिसके परिणामस्वरूप कुल ऋण राशि 10 लाख रुपये हो गई। अभियुक्तों द्वारा 15,65,24,000/- रुपये की राशि प्राप्त कर उसका दुरुपयोग किया गया, जो एक गंभीर अपराध है। (1) सोसायटी अध्यक्ष प्रदीपकुमार गौतमभाई पंड्या, वर्तमान में अंकलेश्वर, अंबेग्रीन सिटी, तहसील अंकलेश्वर, जिला भरूच निवासी। (2) प्रदीपकुमार भगुभाई पटेल, वर्तमान में 10, बेओनविला सोसायटी, डीमार्ट के पीछे, कैनाल रोड, जहांगीरपुरा, सूरत निवासी; मूल निवास सरसा गांव, तहसील ओलपाड, जिला सूरत। (3) जतिन ईश्वरभाई नायक, 4-रस्मेश्वरम रो-हाउस, गंगेश्वर मंदिर के पीछे, अडाजन, सूरत निवासी। इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया है और इनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई शुरू कर दी गई है। उपरोक्त तीनों अभियुक्तों ने आपस में मिलीभगत करके फर्जी स्टॉक स्लिप दिखाकर और जानबूझकर फर्जी होने के बावजूद उन्हें एनसीडीसी को प्रस्तुत करके, उन पर बड़ा ऋण प्राप्त किया और उसकी किश्तें न चुकाकर धन का गबन किया, जो एक गंभीर अपराध है। इस ऋण को प्राप्त करने में पीपुल्स कंपनी लिमिटेड बैंक के प्रबंधक जतिन नायक ने अहम भूमिका निभाई है। बैंक के माध्यम से फर्जी रसीदें बनाकर और भौतिक सत्यापन में गड़बड़ी होने के बावजूद उन्हें सही बताकर, बैंक प्रबंधक जतिन नायक ने एनसीडीसी को धोखा दिया है।

शून्य त्रुटि एजेंसी

सोसाइटी के अध्यक्ष और स्टोरकीपर कानून की जानकारी नहीं रखते, फिर भी उन्होंने अपराध में भाग लिया है। इसलिए वे अपराधी हैं। लेकिन पीपुल्स को-ओ बैंक के प्रबंधक जतिन नायक, जिन्होंने इस अपराध को बढ़ावा दिया, कानून के जानकार हैं, पीएचडी तक की पढ़ाई कर चुके हैं और बैंक में उन्हें ढाई लाख रुपये प्रति माह वेतन मिलता है। इसके बावजूद यह कैसे उचित है कि सोसाइटी के पदाधिकारी सरकारी संस्था को इस तरह गुमराह करें और संस्था को धोखा देने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करें? पीपुल्स को-ओ बैंक के प्रबंधक जतिन नायक ने और किन-किन कामों में गलतियाँ की हैं और इस फर्जी भौतिक सत्यापन में कौन-कौन से अन्य अधिकारी शामिल हैं? इसकी भी जांच होनी चाहिए।

उच्च अधिकारी के रूप में मिलने वाले सेवा के अवसर को वंचितों, अंतिम छोर के लोगों और जनसाधारण की सेवा करने के संवेदनशील अवसर के रूप में अपनाएं : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा 2025 में सफल हुए स्पीपा के युवा उम्मीदवारों को सीख

▸▸ 2025 में सर्वाधिक सफल हुए 35 युवा उम्मीदवारों ने मुख्यमंत्री से की शिष्टाचार भेंट

▸▸ स्पीपा के यूपीएससी सिविल सेवा स्टडी सेंटर का लाभ उठाकर 34 वर्षों में 348 युवाओं ने सफलता हासिल की

▸▸ राज्य सरकार की ओर से संचालित स्पीपा दूसरे निजी संस्थानों की प्री-एग्जाम प्रशिक्षण क्लास के समकक्ष नतीजे देने वाला प्रतिष्ठित संस्थान बना

(जीएनएस)। गांधीनगर : राज्य सरकार द्वारा संचालित सरदार पटेल लोक प्रशासन संस्थान (स्पीपा) में प्री-एग्जाम प्रशिक्षण प्राप्त करके संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) की सिविल सेवा परीक्षा 2025 में सफलता प्राप्त करने वाले 35 युवाओं ने शनिवार को गांधीनगर में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल से शिष्टाचार भेंट की। मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने इन युवाओं के साथ सहज संवाद करते हुए उन्हें भविष्य में उच्च अधिकारी के तौर पर मिलने वाले सेवा के अवसर को वंचितों, अंतिम छोर के लोगों और जनसाधारण की सेवा करने के संवेदनशील अवसर के रूप में अपनाने का प्रेरक मार्गदर्शन दिया।

श्री भूपेंद्र पटेल ने उच्च प्रतिस्पर्धी परीक्षा में सफलता प्राप्त करने वाले इन युवाओं को उज्जवल करियर की शुभकामनाएं दीं और यह आह्वान किया कि वे सरकार और जनता के बीच सौहार्द बनाए रखें और राज्य सेवा से राष्ट्र सेवा का दायित्व ही उनकी प्राथमिकता रहे।

उल्लेखनीय है कि अखिल भारतीय सिविल सेवा में राज्य के युवाओं का प्रतिनिधित्व बढ़े और इसमें राज्य के युवा अधिक से अधिक संख्या में चयनित हों, इस उद्देश्य से गुजरात सरकार की ओर से 1992 में स्पीपा-अहमदाबाद में ‘यूपीएससी सिविल सेवा स्टडी सेंटर’ शुरू किया गया है। इस सेंटर के जरिए यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा की प्रारंभिक परीक्षा (प्रीलिम्स), मुख्य परीक्षा (मेंस) और साक्षात्कार परीक्षण (इंटरव्यू) के लिए निःशुल्क प्रशिक्षण क्लास संचालित की जाती है। यूपीएससी द्वारा ली गई सिविल सेवा परीक्षा 2025 में स्पीपा के सर्वाधिक कुल 35 उम्मीदवार अखिल भारतीय सेवा और केंद्रीय सिविल सेवा के लिए अंतिम रूप से चुने गए हैं।

1992 से वर्ष 2026 तक, यानी पिछले 34 वर्षों में स्पीपा अहमदाबाद से कुल 348 उम्मीदवार यूपीएससी सिविल सेवा में अंतिम रूप से चयनित होकर आईएएस, आईपीएस, आईएफएस और आईआरएस जैसे विभिन्न कैडरों में शामिल हुए हैं।

स्पीपा द्वारा यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा की प्रशिक्षण क्लास में दी जाने वाली सुविधाएं

स्पीपा में यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा की प्रारंभिक और मुख्य परीक्षा की प्रशिक्षण क्लास में नियमित व्याख्यान, ग्रुप डिस्कशन और मॉक टेस्ट के जरिए, तथा साक्षात्कार परीक्षण की प्रशिक्षण क्लास में व्याख्यान, ग्रुप डिस्कशन, वन-टू-वन इंटरव्यू और मॉक इंटरव्यू के माध्यम से गहन प्रशिक्षण दिया जाता है। इसके अलावा, स्पीपा की लाइब्रेरी में उम्मीदवारों के लिए यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी के लिए आवश्यक सभी प्रकार की पुस्तकें, मैगजीन और समाचार पत्र आदि जरूरी संख्या में होते हैं। उम्मीदवारों के पढ़ने के लिए वाचनालय की व्यवस्था भी उपलब्ध है। इतना ही नहीं, प्रशिक्षुओं को संस्थान के नियमों और उपलब्धता के आधार पर हॉस्टल की सुविधा दी जाती है तथा उम्मीदवार तैयारी करने के लिए इंटरनेट का उपयोग कर सकें, इसके लिए निःशुल्क वाई-फाई की सुविधा भी दी जाती है।

राज्य सरकार द्वारा स्पीपा में यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए दी जाने वाली प्रोत्साहन-सहायता

यूपीएससी सिविल सेवा की प्रारंभिक परीक्षा की प्रशिक्षण कक्षाओं में प्रवेश लेने के बाद अधिक से अधिक सात महीने के लिए प्रतिमाह 2000 रुपए की प्रोत्साहन सहायता, यूपीएससी सिविल सेवा की प्रारंभिक परीक्षा पास करने वाले युवक को 25,000 रुपए और युवती को 30,000 रुपए की प्रोत्साहन सहायता दी जाती है। यूपीएससी सिविल सेवा की मुख्य परीक्षा पास करने वाले युवक को 25,000 रुपए और युवती को 30,000 रुपए प्रोत्साहन सहायता तथा यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा में अंतिम रूप से चयनित होने वाले गुजरात के डोमिसाइल युवक को 51,000 रुपए और युवती को 61,000 रुपए की प्रोत्साहन सहायता, साथ ही गुजरात के नॉन डोमिसाइल युवक को 21,000 रुपए और युवती को 31,000 रुपए की प्रोत्साहन सहायता भी दी जाती है।

ऐसी अत्याधुनिक सुविधाओं के चलते स्पीपा से प्रशिक्षण प्राप्त उम्मीदवारों की सफलता दर लगातार बढ़ती जा रही है। इतना ही नहीं, राज्य सरकार द्वारा संचालित स्पीपा ने यूपीएससी जैसी उच्च परीक्षा के पूर्व प्रशिक्षण के लिए कोचिंग प्रदान करने वाले अन्य दूसरे संस्थानों के नतीजों के समकक्ष नतीजे हासिल करने की उपलब्धि प्राप्त की है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के साथ स्पीपा के सफल उम्मीदवारों की इस मुलाकात के दौरान स्पीपा के महानिदेशक श्री हारित शुक्ला, मुख्यमंत्री के अपर प्रधान सचिव डॉ. विक्रांत पांडे और स्पीपा के उप महानिदेशक श्री चंद्रेश कोटक भी मौजूद रहे।

पंजाब में ‘बदलाव’ का बिगुल : अमित शाह का वादा—भाजपा सरकार बनी तो दो साल में नशे की समस्या खत्म करेंगे

(जीएनएस)। मोगा। पंजाब की राजनीति में आगामी विधानसभा चुनावों को लेकर हलचल तेज होती जा रही है। इसी कड़ी में केंद्रीय गृह मंत्री Amit Shah ने राज्य में भारतीय जनता पार्टी के चुनावी अभियान का औपचारिक आगाज करते हुए बड़ा राजनीतिक संदेश दिया। मोगा जिले के किल्ली चाहलान गांव में आयोजित भाजपा की ‘बदलाव रैली’ को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि पंजाब आज कई गंभीर समस्याओं से जूझ रहा है, जिनमें नशे की बढ़ती लत सबसे बड़ी चुनौती बनकर सामने आई है। शाह ने दावा किया कि यदि राज्य में Bharatiya Janata Party की सरकार बनती है तो केवल दो वर्षों के भीतर नशे के कारोबार को जड़ से समाप्त करने का ठोस अभियान चलाया जाएगा।

रैली को संबोधित करते हुए अमित शाह ने कहा कि पंजाब कभी देश के सबसे समृद्ध और मेहनतकश राज्यों में गिना जाता था, लेकिन पिछले कुछ वर्षों में यहां की स्थिति चिंताजनक हो गई है। उन्होंने कहा कि युवाओं में नशे की लत ने परिवारों को तोड़ दिया है और समाज को कमजोर बना दिया है। शाह ने कहा कि भाजपा पंजाब की जनता को यह भरोसा दिलाती है कि यदि राज्य में ‘डबल इंजन’ की सरकार बनती है, यानी केंद्र और राज्य दोनों जगह एक ही पार्टी की सरकार होगी, तो विकास की रफ्तार तेज होगी और नशे के खिलाफ निर्णायक कार्रवाई की जाएगी।

पश्चिम रेलवे – रतलाम मंडल
संख्या W/623/5/1/NIT दिनांक: 12.03.2026
ई-टेंडरिंग नोटिस
मंडल रेल प्रबंधक / मंडल कार्यालय (कार्यलेखा शाखा) पश्चिम रेलवे रतलाम भारत के राष्ट्रपति की ओर से निम्नलिखित कार्य के लिये “खुली निविदा” ई-निविदा के माध्यम से वेबसाइट **www.ireps.gov.in** पर आमंत्रित करते है । विवरण इस प्रकार है- **क्र.सं.: 1. ई-टेंडरिंग संख्या: RTM-2025-26-194. कार्य का नाम**: Sehore - Providing officer rest house having 05 suits in connection simhastha 2028 including with Electrical Work. **अनुमानित लागत**: रु 1,11,98,294.94. **बयाना राशि**: रु 2,06,000/-. **कार्य समापन अवधि**: 10 माह। **क्र.सं.: 2. ई-टेंडरिंग संख्या: RTM-2025-26-200. कार्य का नाम**: Maksi - Bhopal Section - Raising of platforms at Panchawan at Platform No.1, Parbati at Platform No.1 and 04 meter wide Foot Over Bridge with 02 ramp landings at Panchawan and Parbati station. **अनुमानित लागत**: रु 8,61,60,389.72. **बयाना राशि**: रु 5,80,900/-. **कार्य समापन अवधि**: 15 माह। **वेबसाईट पर अपलोड करने की तिथि दोनों टेंडर के लिए**: 12.03.2026. **निविदा खुलने की तिथि दोनों टेंडर के लिए**: 09.04.2026. विस्तृत निविदा सूचना अर्हता शर्तें एवं अन्य शर्तें वेबसाइट **www.ireps.gov.in** पर उपलब्ध है। निविदा फार्म की लागत शून्य है।
DE/5/1/510
हमें लाईक करें: facebook.com/WesternRly

15 मार्च, विश्व उपभोक्ता अधिकार दिवस

वर्ष 2025 के दौरान राज्य तथा जिला उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग द्वारा क्रमशः 1670 तथा 12920 मामलों का समाधान किया गया

राज्य सरकार द्वारा उपभोक्ताओं से जुड़ी शिकायतों के लिए शुरू की गई हेल्पलाइन से 22700 से अधिक लोगों को मिला मार्गदर्शन

(जीएनएस)। गांधीनगर : एक जागरूक उपभोक्ता सशक्त समाज तथा विश्वसनीय बाजार व्यवस्था का आधार है। विश्वभर में उपभोक्ताओं को उनके अधिकारों के विषय में अवगत करने के लिए हर वर्ष 15 मार्च को 'विश्व उपभोक्ता दिवस' मनाया जाता है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में केन्द्र सरकार उपभोक्ताओं के अधिकारों की रक्षा हो तथा उन्हें सुरक्षित उत्पाद उपलब्ध हों; इसके लिए निरंतर कार्य कर रही है। गुजरात में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में राज्य सरकार उपभोक्ताओं को उनकी शिकायतों का त्वरित एवं प्रभावी निवारण प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। वर्ष 2025 की बात करें, तो राज्य उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग तथा जिला उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग द्वारा क्रमशः 1670 तथा 12920 मामलों का समाधान किया गया है।

कंज्यूमर्स क्लब के लिए राज्य सरकार करती है वार्षिक 1.25 करोड़ रुपए का खर्च

राज्य के नागरिकों में उपभोक्ता के रूप में जागरूकता बढ़े, राज्य का युवाधन उपभोक्ता सुरक्षा गतिविधि में जुड़ने को प्रेरित हो और राज्य में उपभोक्ता गतिविधि को वेग मिले; इस उद्देश्य से कंज्यूमर्स क्लब की योजना शुरू की गई है। हाल में राज्य सरकार द्वारा कुल 2500 कंज्यूमर्स क्लब तैयार किए गए हैं, जिसमें जिलेवार एक समन्वय एजेंसी के रूप में मान्यता प्राप्त उपभोक्ता सुरक्षा मंडल कामकाज करता है। राज्य सरकार द्वारा प्रति क्लब 5000 रुपए की वित्तीय सहायता का भुगतान किया जाता है, जिसके लिए राज्य सरकार वार्षिक लगभग 1.25 करोड़ रुपए खर्च करती है।

विश्व उपभोक्ता अधिकार दिवस 2026 की थीम : सुरक्षित उत्पाद, आश्वस्त उपभोक्ता

इस वर्ष विश्व उपभोक्ता अधिकार दिवस 2026 'सेफ प्रोडक्ट्स, कॉन्फिडेंट कंज्यूमर्स' (सुरक्षित उत्पाद, आश्वस्त उपभोक्ता) थीम अंतर्गत मनाया जा रहा है। इस थीम का मुख्य उद्देश्य उपभोक्ताओं को सुरक्षित एवं गुणवत्तायुक्त उत्पादों की उपलब्धता सुनिश्चित करना है। यह अभियान ऑनलाइन तथा ऑफलाइन बिकने वाले जोखिम भरे या असुरक्षित उत्पादों के विरुद्ध कड़े नियम और देखरेख मजबूत बनाने की जरूरत पर जोर देता है। इसके साथ प्रोडक्ट सुरक्षित है या नहीं; यह सुनिश्चित करने के लिए सरकार, उद्योगों तथा ग्राहकों के बीच सहयोग बढ़ाने पर बल दिया गया है।

राज्य सरकार द्वारा शुरू की गई हेल्पलाइन द्वारा 22700 से अधिक उपभोक्ताओं को मिला मार्गदर्शन

गुजरात में उपभोक्ताओं को उनके अधिकारों के विषय में शिक्षित करने तथा राज्य में न्यायी व्यापार प्रथाओं को प्रोत्साहन देने के लिए राज्य सरकार ने उल्लेखनीय कदम उठाए हैं। राष्ट्रीय स्तर पर ऑनलाइन पोर्टल ई-जागृति तथा 1915 हेल्पलाइन के अलावा; राज्य स्तर पर उपभोक्ताओं से जुड़ी शिकायतों के लिए राज्य सरकार का हेल्पलाइन नंबर 14437 कार्यरत है, जिसमें उपभोक्ताओं को उनसे जुड़ी शिकायतों के विषय में मार्गदर्शन प्रदान किया जाता है। यह हेल्पलाइन अक्टूबर, 2024 से शुरू की गई है, जिसके अंतर्गत अब तक 22700 से अधिक उपभोक्ताओं को सहायता प्रदान की गई है।

2025 में राज्य तथा जिला उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग द्वारा क्रमशः 1670 तथा 12920 मामलों का समाधान किया गया

गुजरात में वर्ष 2025 के दौरान राज्य उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग में 2047 तथा अधीनस्थ जिला उपभोक्ता निवारण आयोग में 18166 शिकायतें दर्ज हुई थीं, जिनमें से क्रमशः 1670 तथा 12920 मामलों का समाधान किया गया है। इसके अलावा; 2025-26 में आयोजित लोक अदालत द्वारा 246 मामलों में 4.34 करोड़ रुपए से अधिक का आपसी समाधान लाकर समस्या सुलझाई गई है। लोक अदालत एक ऐसा मंच है, जहाँ पंचायत से पहले लंबित मामलों अथवा कानून की अदालत में प्री-लिटिगेशन स्टेज पर निपटान किया जाता है।

भरूच में मनाया गया 'विकास उत्सव' : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने भरूच जिले को 1350 करोड़ रुपए के 139 विकास कार्यों की सौगात दी

- **भरूच से मुख्यमंत्री ने अंकलेश्वर-राजपीपला हाईस्पीड कॉरिडोर और एयर स्ट्रीप फेज-2 सहित कई मेगा परियोजनाओं का शिलान्यास किया**
- **प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में राज्य सरकार ने ऐसा सुदृढ़ आयोजन किया है, जिससे विकास कार्यों के लिए धन की कभी कमी न हो : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल**

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल :-

- वर्ष 2001 में राज्य का बजट 36 हजार करोड़ रुपए था, जो आज 4 लाख करोड़ रुपए को पार कर गया है
- भरूच में नए जिला स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स से 2 लाख से अधिक युवाओं के सपने साकार होंगे
- दुनिया में ग्लोबल केमिकल हब के रूप में विख्यात भरूच जिले के जंबूसर में 1 हजार एकड़ में आकार ले रहा है देश का पहला बल्क ड्रग्स पार्क
- **1248.57 करोड़ रुपए के 73 विकास कार्यों के शिलान्यास और 102 करोड़ रुपए के 66 विकास कार्यों के लोकार्पण सहित कुल 1350 करोड़ रुपए के विकास कार्यों की भेंट**
- **आवेदकों को सरल और सुगम प्रशासनिक सेवाएं मुहैया कराने के लिए राजस्व विभाग द्वारा 1.17 करोड़ रुपए के खर्च से नवीनीकृत 4 जनसेवा केंद्रों का लोकार्पण**
- **नर्मदा परिक्रमार्थियों के लिए 8 विश्राम हॉल और ग्रामीण स्तर पर 64 नए पंचायत घरों की भेंट**

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने शनिवार को भरूच जिले के सर्वांगीण विकास को नई गति देते हुए 1248.57 करोड़ रुपए के 73 विकास कार्यों का शिलान्यास और 102 करोड़ रुपए के 66 विकास कार्यों का लोकार्पण कर भरूच के नागरिकों को कुल अनुमानित 1350.68 करोड़ रुपए की 139 विकास परियोजनाओं की भेंट दी। इस मौके पर उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में राज्य सरकार ने ऐसा सुदृढ़ आयोजन किया है, जिससे शिक्षा, स्वास्थ्य, रोड नेटवर्क, कृषि और उद्योग जैसे विकास के किसी भी कार्य के लिए धन की कभी कमी न हो।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री के डेवलपमेंट मिशन के माध्यम से इंफ्रास्ट्रक्चर से लेकर एक्सीलेंस तक और प्लेग्राउंड से लेकर प्लग एंड प्ल तक का समग्र विकास हो रहा है, तब शहरों और जिलों में जनप्रतिनिधियों की नए विकास कार्यों की भावनाओं और मांगों को पूरा करने के लिए राज्य सरकार सदैव तत्पर है।

भरूच के झाड़ेश्वर स्थित स्वामीनारायण मंदिर परिसर में स्वास्थ्य राज्य मंत्री और भरूच जिला प्रभारी मंत्री श्री प्रफुलभाई पानशेरिया एवं जलापूर्ति राज्य मंत्री श्री ईश्वरसिंह पटेल की विशेष उपस्थिति में आयोजित समारोह में मुख्यमंत्री ने आगे कहा कि भरूच जिले में आज बड़ी लागत वाली जिन परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास हुआ है, उससे नागरिकों के ईज ऑफ लिविंग यानी जीवन जीने की सुगमता में उल्लेखनीय सुधार होगा। इंफ्रास्ट्रक्चर से लेकर शिक्षा और स्वास्थ्य तक के सभी क्षेत्रों में हुए ये कार्य भरूच के विकास में अहम साबित होंगे।

मुख्यमंत्री ने अतीत के विकट दिनों की याद दिलाते हुए कहा कि 1960 में जब गुजरात एक अलग राज्य बना था, तब संसाधनों की कमी थी, दूर-दूर तक विकास की संभावना दिखाई नहीं देती थी। लेकिन, 2001 से श्री नरेन्द्र मोदी ने विकास की जो राजनीति शुरू की, उससे राज्य आज आत्मनिर्भर बन गया है। वर्ष 2001 में राज्य का बजट केवल 36,000 करोड़ रुपए था, जो आज बढ़कर 4 लाख करोड़ रुपए के पार हो गया है।

औद्योगिक हब के रूप में उभरे भरूच के विकास को और अधिक तेजी देने के साथ ही भरूच की एयर और रोड कनेक्टिविटी को बढ़ान के लिए मुख्यमंत्री ने राज्य सरकार की प्रतिबद्धता व्यक्त करते हुए कहा कि भरूच, अंकलेश्वर, दहेज और सायखा जैसे औद्योगिक क्षेत्रों को वैश्विक स्तर पर जोड़ने के लिए अंकलेश्वर में एयरपोर्ट डेवलपमेंट का काम शुरू किया गया है। अंकलेश्वर-राजपीपला की 44 किमी लंबी सड़क को 760 करोड़ रुपए की लागत से हाई-स्पीड कॉरिडोर में अपग्रेड करने का काम शुरू हो चुका है। इससे स्टैच्यू ऑफ यूनिटी तक पहुंचना और भी आसान हो जाएगा। लॉजिस्टिक्स सुविधा के लिए भरूच-दहेज रोड को एक्सेस कंट्रोल एक्सप्रेस-वे बनाने का काम भी जोरों से चल रहा है।

उन्होंने आगे कहा कि कभी भरूच जिला पंचायत का बजट 300 करोड़ रुपए था, जबकि आज एक ही दिन में जिला पंचायत 309 करोड़ रुपए के कार्यों की भेंट दे रही है। विकास की राजनीति और जनहित के विजन का यह जीवंत उदाहरण है।

उन्होंने कहा कि 'खेलो इंडिया' और 'फिट इंडिया' जैसे अभियानों को गति देने के उद्देश्य के साथ भरूच में नए जिला स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स के जरिए 2 लाख से अधिक युवाओं का सपना साकार होगा। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि 2030 मे जब अहमदाबाद में कॉमनवेल्थ गेम्स आयोजित होने जा रहे हैं, तब ऐसे स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स प्रतिभाशाली नौजवानों को बेहतर प्लेटफॉर्म प्रदान करेंगे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि दुनिया में ग्लोबल केमिकल हब के रूप में विख्यात भरूच जिले के जंबूसर में एक हजार एकड़ क्षेत्र में देश का पहला बल्क ड्रग्स पार्क आकार ले रहा है। भरूच, नेत्रंग, राजपारड़ी और जंबूसर में 50 करोड़ रुपए के खर्च से बनने वाला कॉमर्शियल शॉपिंग सेंटर सह रेस्ट हाउस स्थानीय व्यापार और आगंतुकों के लिए वरदान साबित होगा। मां नर्मदा की परिक्रमा करने वाले लाखों श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए भरूच और झगड़िया में 8 अलग-अलग स्थानों पर विश्राम हॉल के निर्माण से श्रद्धालुओं के लिए परिक्रमा करना और भी आरामदायक बन जाएगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार ने भरूच को ग्रोथ हब के रूप में सूरत इकोनॉमिक रीजन हब में शामिल किया है और इसके रोड इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए हाल ही में 1185 करोड़ रुपए स्वीकृत किए हैं। डबल इंजन सरकार के प्रयासों से विकास की गति के डबल होने का उल्लेख करते हुए उन्होंने सभी लोगों से 'विकसित गुजरात से विकसित भारत' का संकल्प साकार करने में योगदान देने का आह्वान किया। भरूच के सांसद श्री मनसुखभाई वसावा ने भरूच जिले में अवैध रेत खनन को रोककर भूमाफियों के खिलाफ सरकार द्वारा की गई कठोर कार्रवाई की प्रशंसा की और कहा कि इस कार्रवाई के दौरान वसूली गई जुर्माने की राशि से भरूच जिले के विकास कार्यों में आर्थिक सहयोग मिल रहा है, जिसका सीधा लाभ आम नागरिकों को मिल रहा है। इसके साथ ही, भरूच जिले की आंतरिक सड़कों और हाईवे का काम भी बहुत सटीकता और तेजी से हो रहा है। इस इंफ्रास्ट्रक्चर सुविधा के कारण जिले के औद्योगिक क्षेत्रो के विकास और विस्तार को गति मिली है। गुजरात के स्वास्थ्य राज्य मंत्री और भरूच जिला के प्रभारी मंत्री श्री प्रफुलभाई पानशेरिया ने अपने संबोधन में केंद्र और राज्य सरकार द्वारा किए जा रहे अविरत विकास कार्यों की विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि तत्कालीन मुख्यमंत्री और मौजूदा प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने विकास की असली परिभाषा गुजरात में शुरू की थी, जिसे आज मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की अगुवाई में ग्राम पंचायत के सरपंच से लेकर सांसद तक सभी चुने हुए जनप्रतिनिधि आगे बढ़ाकर जिले के विकास में योगदान दे रहे हैं।

श्री पानशेरिया ने कहा कि प्रधानमंत्री ने भारतीय सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के जरिए दुनिया को वसुधैव कुटुंबकम और बहुजन हिताय-बहुजन सुखाय का नारा दिया है, जिसे राज्य के मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल सही मायनों में चरितार्थ कर रहे हैं। सरकार हमेशा अंत्योदय के हित में काम कर रही है और यह सुनिश्चित करने की दिशा में काम कर रही है कि प्रत्येक योजना का लाभ असली लाभार्थी तक पहुंचे।

जिला पंचायत अध्यक्ष श्री महेन्द्रसिंह वांसदिया ने स्वागत भाषण में कार्यक्रम की रूपरेखा दी और जिले में हो रहे विकास कार्यों के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के करकमलों से विभिन्न योजनाओं के लाभार्थियों को सहायता वितरित की गई। कार्यक्रम में जलापूर्ति और जल संसाधन राज्य मंत्री श्री ईश्वरसिंह पटेल, विधायक सर्वश्री रमेशभाई मिस्त्री, अरुणसिंह राणा, रितेशभाई वसावा, नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती विभूतिबा यादव, जिला कलेक्टर श्री गौरांग मकवाणा, जिला विकास अधिकारी श्री योगेश कापसे, सड़क एवं भवन विभाग के मुख्य अभियंता श्री सी.पी. पटेल, जिले के अग्रणी श्री प्रकाशभाई मोदी, पूर्व सांसद श्री भरतसिंह परमार, पूर्व विधायक श्री दुष्यंतभाई पटेल, श्री मारुतिसिंह अटोदरिया, जिला पंचायत के जनप्रतिनिधियों सहित जिला प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी और बड़ी संख्या में जिले के नागरिक मौजूद रहे।

सूरत: चरागाहों की बिक्री के बाद गायें सड़कों पर भटक रही थीं, कलेक्टर ने कार्रवाई की और गायों के लिए सेवाएं उपलब्ध कराईं

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। सूरत का भौगोलिक विस्तार लगातार बढ़ रहा है। सूरत का भूगोल बदल रहा है। इसका कारण
वे गाँव हैं जो बढ़ते हुए सूरत में शामिल हो रहे हैं और नए गाँव बन रहे हैं, और यह कहना गलत नहीं होगा कि सूरत एक परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है।

शून्य त्रुटि विज्ञापन

लेकिन शर्मनाक बात यह है कि निगमित गांवों और उनमें स्थित चरागाहों को
ग्राम प्रशासक स्वयं बड़े-बड़े लोगों या राजनीतिक विचारधारा वाले बिल्डरों को बेच रहे हैं।

हिंदू राष्ट्र की प्रशंसा करने वाले और उनका समर्थन करने वाले भ्रष्ट शासकों की प्रशंसा करने वाले इन हिंदुत्ववादी ठेकेदारों के लिए इससे ज्यादा शर्मनाक **क्या हो सकता है** ? जहां चरागाह बेचना और चरागाह लेना अपराध है,
वहां भी खरीदार और विक्रेता दोनों ही अपराधी हैं।

बिल्डरों ने गायों के चरागाह को अपने कंधों पर उठा लिया

एक ओर, कुछ ग्रामीण प्रशासकों और अधिकारियों के कारण गांवों की चरागाह भूमि
बेची जा रही है, वहीं दूसरी ओर, शहरों की सड़कों पर आवारा गायें घूमती रहती हैं, जिससे पैदल चलने वालों की जान को खतरा होता है।

वहीं दूसरी ओर, ऐसी ही गाय को बचाने की कोशिश में वाहन चालक गंभीर रूप से घायल हो जाते हैं या उनकी मृत्यु हो जाती है। कई मामलों में,
गाय की मृत्यु की खबर अखबारों में भी छपी है।

प्रशासन से नागरिकों की लगातार शिकायतों के बावजूद कोई समाधान नहीं निकला है।

इसका मुख्य कारण यह है कि गायों के लिए बनाए गए चरागाह बेचे जा रहे हैं, जिसके कारण गायें गरीब हो जाती हैं और
अपना पेट भरने के लिए सड़कों पर पड़े कचरे या कूड़े के ढेर में जाकर प्लास्टिक खाने को मजबूर हो जाती हैं।

एक ओर हम कहते हैं कि चींटियाँ अनाज के समान होती हैं और हाथी पत्थर के समान, लेकिन यहाँ,
इन भूखी और असहाय गायों का ऐसा सौभाग्य नहीं है, इसलिए माँ गाय अपना पेट भरने के लिए सड़क पर पड़े कचरे या कूड़े को खाने को मजबूर है।

इस प्रकार, गाँव के तथाकथित प्रशासकों

द्वारा राजनीतिक दिग्गजों की मदद से गाँव की चरागाह भूमि को खरीदे जाने के कारण , गायों के लिए चारे की कमी हो गई है।

जब भूख और प्यास से भटकती ये गायें दूध देना बंद कर देती हैं, तो पशुपालक भी उन्हें सड़क पर छोड़ देते हैं। क्योंकि उनके पास दूध न देने वाली गायों के लिए चारा नहीं होता या फिर वे गायें अनाथ होकर सड़क पर भटकने लगती हैं।

कुछ लालची आवारा लोग इसका फायदा उठाते हैं। और ऐसे लोग
रात में तिपहिया या चार पहिया वाहनों में आते हैं और अनाथ गायों को उठाकर कसाईखाने में बेच देते हैं।

तो यहाँ सवाल उठता है कि

एक तरफ हम गौभक्तों और हिंदू राष्ट्र की बात करते हैं, वहीं दूसरी तरफ अपने ही देश में खुलेआम गायों की हत्या होते देख हम घोर चुप्पी साधे रहते हैं। ऐसे में गाय को राष्ट्रीय पक्षी मोर की तरह पवित्र और पूजनीय राष्ट्रीय गौमाता घोषित क्यों नहीं किया गया है
? सरकार ऊपर से नीचे तक दोहरी प्रणाली वाली होने के बावजूद
गौहत्या के लिए कोई कानून क्यों नहीं बनाया गया है?

अब मुख्य मुद्दे पर आते हैं,

कलेक्टर को कानूनी कार्रवाई करनी चाहिए और उन सभी गांवों के भूमि खरीदारों और विक्रेताओं से जमीनें वापस ले लेनी चाहिए जिनकी चरागाह भूमि बेची गई है और सरकार को उन जमीनों को वापस लेना चाहिए। और ऐसी जमीनों पर दबाव कम करके
ऐसे विक्रेताओं और खरीदारों
पर किसी प्रकार की पाबंदी क्यों नहीं लगाई जानी चाहिए? उनके खिलाफ कार्रवाई करना और उन्हें जेल भेजना जरूरी है। क्योंकि
चरवाहों और आवारा गायों को पकड़ने गए पुलिसकर्मियों के बीच झड़पों जैसी गंभीर घटनाओं का मूल कारण
भी चरागाह भूमि की बिक्री ही है। और अंत में, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि चरागाह भूमि पर चरने वाले सांडों को पिंजरे में बंद कर दिया जाए और कलेक्टर को चरागाह भूमि को खोलकर सरकार और ग्रामीणों के सहयोग से हरी घास और मुलायम घास लगाने की योजना बनानी चाहिए और चारे का उत्पादन शुरू करना चाहिए। और गौशालाओं में ऐसी घास उपलब्ध कराने से सड़कों पर भटकती गायों की भूख की समस्या का समाधान हो जाएगा, और
सड़कों पर भटकते पशुओं का कष्ट समाप्त हो जाएगा, जिससे न तो गायों की मृत्यु होगी और न ही मनुष्यों की। गायों को वधशाला जाने से बचाया जा सकेगा। यहाँ
केवल कलेक्टर और सरकार को अपनी तंदुरुस्ती दिखानी होगी, चरागाहों को साफ करने के लिए मैदान में उतरना होगा और
सच्ची गौसेवा का एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करना होगा।

सूरत शहर और जिले में उन सभी चरागाहों का तत्काल सर्वेक्षण किया जाना चाहिए जिन पर अवैध रूप से अतिक्रमण किया गया है
, यथासंभव अधिक से अधिक खुली जमीनों पर नियंत्रण स्थापित किया जाना चाहिए, और
जिला कलेक्टर को गायों के हित में दबाव डालकर बेची गई या अतिक्रमण की गई चरागाहों की बिक्री को रद्द करने के लिए तत्काल कदम उठाने चाहिए।

"सूरत उमरवाड़ा भूमि विवाद में छगनलाल मेवाड़ा बनाम नरेश अग्रवाल और भूमि हथियाने वाली समिति"

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। सूरत शहर, उमरवाड़ा, शहर सर्वेक्षण संख्या 2177, टीपी योजना संख्या 8 (उमरवाड़ा), अंतिम भूखंड संख्या 83, जिसका क्षेत्रफल 11209 वर्ग मीटर है। इस स्थल के मूल स्वामी-कब्जेदार, ज़ारवाद मुल्तानी पंच कब्रिस्तान ट्रस्ट के न्यासियों ने 3/12/2014 के एक समझौता ज्ञापन के माध्यम से छगनलाल डी. मेवाड़ा को स्वामित्व अधिकार सौंप दिए थे और तब से छगनलाल मेवाड़ा इस स्थल के स्वामी-प्रशासक के रूप में इसका प्रबंधन कर रहे हैं। इस जमीन पर कब्जा करने के लिए नरेश अग्रवाल नामक व्यक्ति ने अपराध किया है और उसने सूरत शहर के वर्तमान कलेक्टर छगनलाल मेवाड़ा और सौरभ परधी के खिलाफ गुजरात भूमि हड़पने (निषेध) अधिनियम, 2020 के प्रावधानों के तहत किसी भी तरह से जमीन पर कब्जा किया है। 29/07/2025 को, भूमि हड़पने समिति ने
छगनलाल मेवाड़ा का पक्ष सुने बिना ही गलत तरीके से, नरेश अग्रवाल के पुत्र हेमंत नरेश अग्रवाल, निवासी श्याम आवास भातर रोड, सूरत को उनके नाम पर नियुक्त कर दिया। 29/07/2025 को, सूरत के कलेक्टर द्वारा छगनलाल मेवाड़ा को उनके प्रतिनिधि के साथ

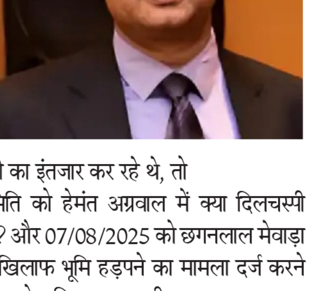

भूमि हड़पने समिति के समक्ष पेश किया गया। छगनलाल मेवाड़ा अपने वकील के माध्यम से भूमि हड़पने समिति के समक्ष उपस्थित हुए और अपना पक्ष रखा। लेकिन भूमि हड़पने की समिति, मानो भंग हो चुकी हो, ने छगनलाल मेवाड़ा और उनके वकील की बात पाँच मिनट तक भी संतोषजनक ढंग से नहीं सुनी और समिति के सदस्यों ने यह कहते हुए मामले को सुनने से इनकार कर दिया कि उन्हें इसकी जानकारी है। उस दिन उपस्थित सभी पक्ष कलेक्टर कार्यालय के बाहर बैठे थे। इससे क्या संकेत मिलता है कि सूरत कलेक्टर के कार्यालय में केवल हेमंत अग्रवाल, नरेश अग्रवाल और नटवर मुरलीलाल हरलालका ही एसी कार्यालय में बैठे थे? जब सभी पक्ष बाहर बैठकर अपनी बारी का इंतजार कर रहे थे, तो
समिति को हेमंत अग्रवाल में क्या दिलचस्पी थी? और 07/08/2025 को छगनलाल मेवाड़ा के खिलाफ भूमि हड़पने का मामला दर्ज करने का आदेश दिया गया।गरवी गुजरात 1 1

शून्य त्रुटि एजेंसी

छगनलाल मेवाड़ा ने ज़ारवाद मुल्तानी पंच मस्जिद स्थल के ट्रस्टियों के साथ एक समझौते के माध्यम से कानूनी रूप से भूमि पर कब्जा प्राप्त कर लिया है, यह तथ्य साक्ष्य सहित भूमि हड़पने वाली समिति के समक्ष प्रस्तुत किया गया है, सभी साक्ष्य उपलब्ध कराए गए हैं, और भूमि के मूल मालिकों ने भूमि हड़पने के संबंध में कोई शिकायत दर्ज नहीं की है, तो छगनलाल मेवाड़ा के खिलाफ किसी तीसरे पक्ष द्वारा शिकायत दर्ज करने का प्रश्न ही नहीं उठता। यदि छगनलाल मेवाड़ा हेमंत अग्रवाल को नहीं जानते हैं, तो क्या वे उन्हें जानते हैं या नरेश अग्रवाल को नहीं जानते हैं? इस प्रकार, भूमि हड़पने वाली समिति ने हेमंत नरेश अग्रवाल के साथ मिलीभगत करके गलत तरीके से मामला दर्ज किया है। जिसके कारण छगनलाल मेवाड़ा को जिला न्यायालय, उच्च न्यायालय और सर्वोच्च न्यायालय का सहारा लेना पड़ा। छगनलाल मेवाड़ा द्वारा 12/08/2025 को सर्वोच्च न्यायालय में विशेष अनुमति अपील (आपराधिक) (एस) 11907/2025 दायर की गई थी। कलेक्टर के दिनांक 16/07/2025 के नोटिस पर निषेधाज्ञा जारी की गई है।

उमरवाड़ा स्थित इस भूमि के संबंध में, नरेश अग्रवाल (कुबेरजी एंटरप्राइज) के साझेदार नटवरलाल मुरलीलाल हरलालका ने उमरवाड़ा स्थित उपरोक्त भूमि का कब्जा लेने के लिए सूरत के प्रधान वरिष्ठ सिविल न्यायाधीश की अदालत में पुलिस सुरक्षा की मांग की थी। अदालत ने फैसला सुनाया कि यदि कब्जे के आधार पर मांग नहीं की गई है, तो उस भूमि का कब्जा सौंपने के लिए पुलिस सुरक्षा नहीं दी जा सकती। तदनुसार, 20/07/2018 को याचिका संख्या 20/2015 खारिज कर दी गई। इस प्रकार, उपरोक्त अदालत का आदेश इस तथ्य को सिद्ध करता है कि नरेश अग्रवाल और नटवरलाल हरलालका इस भूमि पर कब्जे में नहीं थे। उमरवाड़ा स्थित इस भूमि को सूरत के कलेक्टर जयप्रकाश शिवहर के कार्यकाल के दौरान गलत तरीके से एनए (गैर-कानूनी घोषित) करने की अनुमति दी गई थी। इस भूमि को एनए घोषित करने से पहले आवेदन से पहले विभिन्न विभागों की राय ली गई थी। साथ ही, नियमों के अनुसार, एनए अनुमति उस स्थिति में नहीं दी जा सकती जहां एनए अनुमति से पहले कोई अदालती मामला लंबित न हो। इस भूमि पर अदालती मामला चल रहा होने के बावजूद एनए अनुमति दी गई थी। और एक हलफनामा प्रस्तुत किया गया है कि कोई भी अदालती मामला लंबित नहीं है। इस दौरान, नामदार राजस्व विभाग में एक पुनरीक्षण आवेदन लंबित था, नामदार गुजरात उच्च न्यायालय में एक मामला लंबित था और गन्नोट कार्यवाही के कारण प्राप्त कृषि भूमि को केशवभाई घुसाभाई रामोलिया ने पुराने स्वरूप में वितरित करने की कार्रवाई करने के बाद बेच दिया था। नामदार सिविल न्यायालय में पुनरीक्षण ज्ञापन संख्या 288/2014 के तहत एक दावा था। उप कलेक्टर के समक्ष एक लंबित मुकदमा दर्ज किया गया है, माननीय सर्वोच्च न्यायालय में याचिका संख्या 4096/2015 दायर की गई है। केशवभाई घुसाभाई रामोलिया ने 15/06/2013 को एनए अनुमति प्राप्त करने के लिए एक हलफनामा प्रस्तुत किया था कि वह किसी भी दीवानी मुकदमे, अन्य प्रकार के मुकदमे में नहीं हैं और किसी भी प्रकार का कोई विवाद किसी भी प्राधिकरण/अधिनियम, न्यायाधिकरण या न्यायालय में लंबित नहीं है। लंबित अदालती मामलों के बावजूद और इस संबंध में तत्कालीन कलेक्टर को लिखित शिकायत के बावजूद, कलेक्टर जयप्रकाश शिवहर ने एनए अनुमति नहीं दी है और न ही अनुमति रद्द की है। रामोलिया केशवभाई घुसाभाई ने गैर-कृषि क्षेत्र के लिए अनुमति हेतु आवेदन किया है। 15 इंद्रप्रस्थ सोसाइटी, मागोब ने 15/03/2014 को आवेदन किया था। एनए अनुमति देने से पहले, सरकार के विभिन्न विभागों की राय प्राप्त की जाती है। कलेक्टर कार्यालय से दिनांक 16/09/2011 को पत्र संख्या LAQ/Vashi/2386 के माध्यम से राय मांगी गई थी। गनोट शाखा से
दिनांक 16/01/2013, उप कलेक्टर नगर प्रांत सूरत से दिनांक 13/12/2011, मामलतदार नगर से दिनांक 14/11/2011, जिला आपूर्ति अधिकारी से दिनांक 27/09/2011, सहायक नगर योजनाकार/शहरी विकास प्राधिकरण से दिनांक 17/06/2011 के पत्रों से यह स्पष्ट होता है कि जब आवेदक ने 15/03/2014 को एनए अनुमति के लिए आवेदन किया था, तो उपर्युक्त विभिन्न विभागों की राय 3 वर्ष पहले सरकार को कैसे प्राप्त हुई? यह तथ्य साबित करता है कि कलेक्टर जयप्रकाश शिवहर ने भ्रष्टाचार किया और एनए (नेशनल लाइसेंस) की अनुमति दी, जिसे रद्द किया जाना चाहिए। इस गलती के संबंध में कलेक्टर जयप्रकाश शिवहर के खिलाफ सरकार के समक्ष शिकायत दर्ज कराई गई है। सरकार ने अनुरोध के अनुसार सबूत भी प्रस्तुत कर दिए हैं। नरेश अग्रवाल ने लोगों की जमीनों के लिए जो पैसा खरीदा था, उसका भुगतान नहीं किया है, इसमें कई एनआरआई भी शामिल हैं। नरेश अग्रवाल ने अपने साझेदारों को भी रिहा नहीं किया है और इस सब पैसे का भुगतान न करने और विरोधियों पर दबाव बनाने के लिए, उन्होंने सरौली स्थित भारत कैंसर अस्पताल के पास कुबेरजी वैलेंटाइन प्रोजेक्ट के कार्यालय में अफीम की गोलियां खाकर आत्महत्या कर ली। इससे काफी हंगामा मच गया। 29/09/2023 को, अफीम की गोलियां खाने वाले कुबेरजी ग्रुप के बिल्डर नरेश अग्रवाल ने छगनलाल मेवाड़ा के खिलाफ 5.41 मिनट का ऑडियो वायरल किया और छगनलाल मेवाड़ा के खिलाफ झूठी अफवाहें फैलाकर उन्हें बदनाम करने की कोशिश की। छगनलाल मेवाड़ा राजस्थान के एक सम्मानित व्यापारी और सामाजिक नेता हैं। उन पर निराधार आरोप लगाकर उनके व्यापार और रोजगार को भारी नुकसान पहुंचाया गया है। साथ ही, इस दौरान उनके परिवार को भी मानसिक पीड़ा झेलनी पड़ी है। नरेश अग्रवाल द्वारा लगाए गए झूठे आरोपों से उनके व्यापार पर भी असर पड़ा है। हेमंत नरेश अग्रवाल और भूमि हड़पने वाली समिति ने ऐसा कृत्य किया है जिससे मेवाड़ा में लोगों का विश्वास कम हो गया है। इससे पहले नरेश अग्रवाल के घर आयकर विभाग का छापा पड़ा था, लेकिन उनका इरादा जनता से ली गई रकम लौटाने का नहीं था। सूरत के मौजूदा कलेक्टर सौरभ परघी भी बेदाग हैं। उनके कार्यकाल की शुरुआत में ही सूरत शहर के दो हजार करोड़ रुपये के डुमा जमीन से जुड़ा एक मामला सामने आया था। इसके चलते जमीन हड़पने की समिति के खिलाफ झूठा मामला दर्ज कराने के आरोप में सरकार में शिकायत दर्ज कराई गई है। वहीं, छगनलाल मेवाड़ा ने नरेश अग्रवाल, हेमंत अग्रवाल और नटवरलाल हरलालका के खिलाफ मानहानि का मामला दर्ज कराया है।